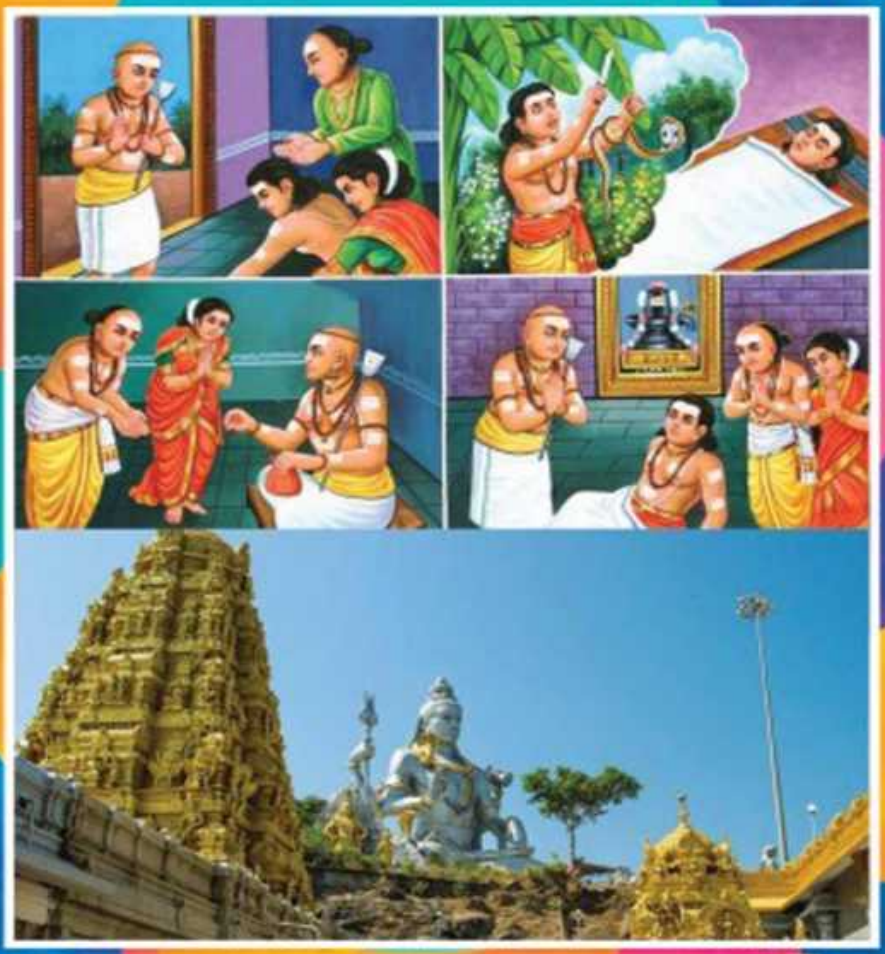
वर्ष 27 अंक 6 जून - 2025 ₹ 3

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी।

शबरी

SHABARI SIKSHA SAMACHAR शिक्षा समाचार

अहिन्दी भाषा प्रदेश तमिलनाडु के सेलम से 27 वर्षों से निरंतर प्रकाशित एक मात्र मासिका



शिव भक्त से प्यार किये, अप्पूदियडिगल सतत।
शिव भक्त को अपनाकर, पाए शिव पद अमर ॥

JOIN Vani Vikas

Spoken Hindi Examination

Learn Spoken Hindi In Simplest Way

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள்

வாய்மொழி தேர்வு

முயன்றால் முடியாதது எதுவுமில்லை
முடங்கிக் கிடந்தால் எது முடியும் ?
எழுந்து நடந்தால் இமயமும் படியும்
மொழியொன்று கற்றால் வழியொன்று
மொழிகள் பலகற்றால் பல வழியுண்டு
வாருங்கள் சபரியுடன் வழிகாட்டுகிறோம்
வருங்காலம் வளமாகிட வழிகாட்டுகிறோம்
வாருங்கள் வாணிவிகாஸில் சேருங்கள்
ஹிந்தியை இதயபூர்வமாய் பேசிட வாருங்கள்



- **Eight** Graded Levels
- No Previous Hindi Qualifications
- Certificate Issued For Each Level

Shabari Siksha Sansthan, 193, Second Agraharam, Salem - 636 001.

पढ़ो मन भरके

शबरी शिक्षा समाचार

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी
SHABARI SALEM
ज्ञानात् परं सुखम्

Vani Vikas 1st Convocation Ceremony
(See Page No.: 50)

वर्ष 27, अंक 06 | मूल्य ₹ 3/- | जून - 2025

प्रधान संपादक
एम. वेंकटेश्वरन
संयुक्त संपादक
आर. जयकरन
सहायक संपादक
आर.जे. संतोष कुमार

कार्यालय
Shabari Siksha Samachar
R.O.: 37, First Agraharam, Salem - 636 001.
A.O.: Shabari Palace,
193 & 194, Second Agraharam,
Salem - 636 001. Tamil Nadu. India.
Phone : 94431-65414, 94433-65414
e-mail : shabarisamachar@gmail.com

संस्थापक व प्रकाशक
Published & Owned by M. Sridhar, on behalf of SHABARI SIKSHA SAMACHAR, 37, First Agraharam, Salem - 636 001 & Printed by D. SivaKumar at Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636001.

समस्त न्यायिक विवादों के लिए क्षेत्राधिकार सेलम होगा । शबरी शिक्षा समाचार में छपी किसी भी सामग्री से संबंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्यवाही प्रकाशन तिथि से एक माह के अंदर की जा सकती है, बाद में किसी भी पूछताछ पर जवाब हेतु बाध्य नहीं । सभी सामग्री से संपादक सम्मत या सहमत हो यह ज़रूरी नहीं ।

SHABARI BOOK SALES
Whatsapp : 9443165414
Office Phone : 9842765414
Office Phone : 9443365414



VANI VIKAS NUMBER
0427-4265414
0427-4552100
Office Hrs : 10.00 AM to 5.00 PM

इस अंक में

संपादक की कलम से 5
अनमोल वचन 6
जिंदा रह जाऊँगा 7
अरुणोदय 8
बुद्ध-जयंती पर विशेष : भगवान बुद्ध 10
सही कीमत 12
प्रणाम 13
क्रोध का परिणाम 14
सिकुड़ती संवेदनाएँ 15
कामचोर 16
संस्कृति का स्वर 17
गज़ल 18
कागज के फूल 19
राष्ट्र प्रथम 19
आगाज 20
गीत 21
पर्यावरण से मत कर खिलवाड़ ... 22
गणपति वंदन 22
कुडलियाँ छंद 23
दस हाइकु 23
अक्सर 24
ग़ज़ल 24
प्यारा होता है संयुक्त परिवार 25
महान संत शिव भक्त-तमिल नायनमार 28
अब युद्ध करो 30
घर का ख्वाब 30
जड़ता से जीवन दुखमय हो 31
चार लोग 31
खूब चले फिर नाम 32
माँ का हृदय 32
अब मैं बूढ़ा हो रहा हूँ 33
वे कैसी औरतें थी 33
तुर्कीए पर ना करना भरोसा... ! . 34
ममता 34
आओ मिलकर पेड़ लगाएँ 35
उत्तम काम करेंगे हम । 35
आओ ! सोये देव जगायें ।। 36
जो बीत गई 36
सचेत न हो पाया 37
माँ एक : रूप अनेक 37
उठो भय त्याग सामना करो 38
अब 38
उन्हें पहुँचाना श्मशान चाहिए 39
नहीं 39
मजदूर दिवस पर एक सच्ची घटना 40
परिवर्तनीय-आना, स्थानीय-चाहिए 40
एक कवि के भाव 41
पाठकों के पत्र 41
नवगीत 42
नवाकुर 42
पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम् . 44
ऋतु संहार 45
தமிழமுது 46
அருள் உலா 47

வாணிவிகாஸ் வாய்மொழித் தேர்வு விவரம்

தேர்வு நடைபெறும் மாதம்	தேர்வு நடைபெறும் தேதி	தேர்வு விண்ணப்பங்கள் வழங்கும் நாள் கடைசி தேதி	₹10/- தாமதக் கட்டணத்துடன் செலுத்த
ஜூலை-2025	20-07-2025	01-04-2025 to 31-05-2025	05-06-2025
அக்டோபர்-2025	26-10-2025	01-07-2025 to 31-08-2025	05-09-2025
ஜனவரி-2026	18-01-2026	01-10-2025 to 30-11-2025	05-12-2025
ஏப்ரல்-2026	19-04-2026	01-01-2026 to 28-02-2026	05-03-2026

வாணி விகாஸ் தேர்வுகளுக்குரிய விண்ணப்பம் மற்றும் தேர்வு கட்டணம் ஆன்லைன் (ONLINE) வாயிலாக மட்டுமே (www.shabari.in) ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.

★ D.D. *மற்றும் மணியார்டர் ஏற்றுக் கொள்ளப்படமாட்டாது.*

Kindly pay exam fee only through
our web portal @ **https://shabari.in**

✍ संपादक की कलम से ...

प्रिय पाठक बन्धुवर, सस्नेह वन्दे ।

भारत भर में सिंदूर विजय यात्रा बहुत बड़ा महोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है । दुनिया के अनेक राज्य यही विश्वास कर रहे थे कि पाकिस्तान के पास अणु बम है और उसके खिलाफ भारत कुछ कार्यवाही नहीं कर पाएगा । चीन से प्राप्त महामारी शस्त्रों के बल पर अपने प्रांत से आतंकियों को भारत के अंदर भेजकर धर्म का नाम लेकर यहाँ पर 26 व्यक्तियों की जान ली गई थी । आतंकवादियों की इस क्रूरता को आँखें बँद करके सहना निःसंदेह बहुत बड़ा अन्याय है ।

अहिंसा का पालन बहुत ही महान माना जाता है । मानवता को बनाए रखने में अहिंसा का अपना स्थान जरूर है । एक गाल पर मारने पर दूसरा गाल दिखाना उदारता का रूप है । लेकिन बार-बार मार खाने पर भी सहिष्णुता के नाम पर कुछ कर न पाना असह्य बन जाता है । इसका एक दूसरा नाम भी है - कायरता । मार खाकर जो बार-बार दूर भाग जाता है, अपनी जान बचाने के लिए मान सम्मान खो जाता है । किसी भी देश या समूह के लिए यह मान्य बात नहीं होती है ।

दुश्मन अगर बात को सही रूप से समझ नहीं पाता है तो उसको उसी की भाषा में समझाने की अत्यंत जरूरत है । भारत देश ने भी वही किया है । 25 मिनट में पाकिस्तान में स्थित कुछ जाने-माने आतंकवादी के निवास को धूल में मिलाकर भारत अपनी शक्ति की प्रदर्शनी कर चुकी है । पाकिस्तान से लगभग 400 ड्रोन भयंकर क्षति पहुँचने के लिए यहाँ भेजे गए । लेकिन सब के सब भारत से मार गिराए गए । भारत के सिंदूर आक्रमण से पाकिस्तान को करोड़ों में नुकसान हुआ है ।

आज दुनिया के सामने भारत अपने आप को महान शक्तिशाली राज्य साबित कर चुका है । हमारे शास्त्र और हमारे वीर सबसे श्रेष्ठ सिद्ध हो चुके हैं । इस आक्रमण से यह साबित हो चुका है कि दुनिया के बहुत ही बलवान राज्यों में भारत का स्थान सर्वोपरि है । हर भारतीय को इसके लिए गर्व का अनुभव करना पड़ेगा । देश के साथ रहे देश के हित के लिए कार्य रहे ।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !!



अनमोल वचन

कपटी

तमिल संत महान तिरुवल्लुवर का कहना है – अपने स्वभाव से कपटी ठहरनेवाले अपने आपको दूसरों के सामने सज्जन दिखााते हैं । मानव मात्र में इस प्रकार के दो प्रकार के गुणों को एक ही रूप में देख सकते हैं ।

भलाई और बुराई के बारे में सोचनेवाले सज्जन हमेशा भलाई करने के बारे में सोचते रहेंगे । किसी भी चीज के बारे में न सोचनेवाले कपटी एक प्रकार से भाग्यशाली है ।

देव अपने मन के हिसाब से कुछ भी करनेवाले होते हैं । कपटी भी कभी दूसरों के दुख या बुराई के बारे में कभी सोचे बिना कुछ भी करते रहते हैं । इसलिए वे देव के समान है ।

संस्कार या सद्गुण से दूर रहनेवाले कपटी लोग अपने से भी नीचता करनेवाले लोगों को देखकर उनसे अपने आपको महान मानकर गर्व करेंगे ।

अपने मन चाहे चीज मिलने पर कपटी लोग अपने आपको सद्गुणी प्रकट करेंगे या दिखायेंगे । अन्य समयों में डर के कारण मात्र से वे अच्छा व्यवहार करेंगे ।

कपटी जो भी रहस्य को जान लेते हैं उसे दूसरों के पास जाकर बता देते हैं इसलिए वे डोल के बराबर माने जाते हैं ।

कपटी उनपर हाथ की मुट्टी से प्रहार करनेवाले लोगों को कुछ देंगे अन्यथा गरीबों या अनाथों को अन्न के एक दाने भी नहीं देंगे ।

गरीबों या असहायों के अपने सामने आकर उनकी व्यथा प्रकट करने पर सज्जन उनकी दशा जानकर कुछ दान करेंगे । मगर कपटी गन्ने को पीसने के बराबर मार खाने से ही कुछ देंगे ।

किसी के खूब खाने या अच्छे अच्छे कपडे पहनने से जलकर कपटी उनपर कुछ भी दोषारोपण करने से नहीं चूकता ।

दुख के समय पर अपने आपको उस दुख से बचाने के लिए कपटी अपने आपको किसी दूसरे को बेच डालने की क्षमता रखते हैं ।

जिंदा रह जाऊँगा

– साहित्य रत्न श्री. जेमि,
कोवै, तमिलनाडु

कितना भी तुम जोर लगा लो मंजूर है मैं कभी नहीं थकूँगा
कितना भी तुम जोर-जोर से हिला लो हिलूँगा मगर न गिरूँगा
बार-बार तुम ले जाओ बाएँ से दाएँ तक मुझे दिला दो
साथ तेरे साथ मैं भी चलता रहूँगा हिलता रह जाऊँगा
सूखे जो पत्ते हैं मेरे वे शायद गिर भी सकते हैं
हरे भरे पत्ते मेरे कभी भी मुझसे दूर नहीं जाएँगे
जोर लगा लो ले जाओ मुझे चाहे चारों ओर
तेरी गति और रीति से कर मैं फिर भी जिंदा रह जाऊँगा ।

वायु के बाद जब पानी बरसने लगेगा खुश हो जाऊँगा मैं
एक-एक बूँद को अपने तन में लगाकर जमीन तक ले जाऊँगा
बारिश की गति तेज भी क्यों होते जावे डरूँगा नहीं
बहुत ही मंद गति से वे मुझे सुलाने का प्रयत्न करें
मान लूँगा उसे मदमस्त मैं अपने आप को सुखी पाऊँगा
मारने लगे हर बूँद बहुत ही मोटे-मोटे बनकर सहूँगा
गिर नहीं जाऊँगा कहीं दूर भी ना भागूँगा
जड़ के सहारे बारिश के बूँद को मैं कुछ हद तक पी लूँगा ।

गरजता सूरज जब घायल करें पत्ते सूखकर जब नीचे गिरे
बूँद बूँद पानी के लिए तरसने का वह माहौल आएगा
गर्मी से मेरे पत्ते सूखकर उलझ जाएँगे कुछ गिरेंगे
कुछ कर नहीं पाऊँगा फिर भी मैं तो जरूर मर नहीं जाऊँगा
बदलते परिवेश के साथ बदलना तो मैं कभी नहीं जानता
बदलते परिवेश में भी मैं अपना जड़ नहीं खोता
बाँस का पेड़ हूँ बाँसुरी नहीं सुख बरसाने के लिए
कितनी भी कठिन हो परिस्थिति जी लूँगा मैं हर रोज बढ़ते बढ़ते ।

अरुणोदय

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार,
कोवै, तमिलनाडु

अरुण को रोना आ रहा था लेकिन वह रो नहीं पा रहा था । जिंदगी में पहली बार उसे उदासी बहुत ही सता रही थी । उसके पिताजी जो सब तरह से उसके लिए एक नायक के समान थे गुजर चुके थे । वह अपने कार में बैठा था । जिस कार में बैठकर वह जा रहा था उसकी कीमत कम से कम 2 करोड़ की होगी । उसके पीछे उसके सगे संबंधी जिन कारों में आ रहे थे उनका भी मूल्य करोड़ों में होगा । उसके पहले एक गाड़ी जा रही थी जो उसके पिताजी के मृत शरीर को फूलों से अलंकृत करके सड़क पर आगे बढ़ रही थी ।

पीछे के सारे मूल्यवान गाड़ी के वही मालिक रहे । अब जिस गाड़ी में उनका अमृत शरीर जा रहा था वह खुद की नहीं बाडे में लाई गई थी । अपने पीछे एक बहुत बड़ा धन और वैभव का साम्राज्य खड़ा करके उसके पिताजी का अमृत शरीर आगे बढ़ रहा था । जो जा रहे थे तब कुछ भी लेकर नहीं पाए खाली हाथ किसी से कुछ कहे बिना, अपने मन की बात को भी प्रकट किए बिना, उनकी जान निकल गई । अब उनकी एकमात्र निशानी उनका मृत शरीर भी श्मशान घाट तक जा रहा था । कुछ घंटे में वह भी जलकर राख बन जाएगा ।

अरुण को भरोसा ही नहीं हो रहा था कि ऐसा भी दिन देखने को मिलेगा । उसके लिए सब कुछ अपना पिताजी ही थे । हर छोटी-छोटी बातों में भी उनसे सलाह लिए बिना वह कुछ कर ही नहीं पाता था । शादी हो गई बच्चे हो गए फिर भी उसके लिए एक बहुत बड़ा गुरु के जैसे उसके पिताजी सब कुछ समझा रहे थे । अब इस दुनिया में नहीं रहे । करोड़ों पैसे उड़ाने पर भी वे वापस आनेवाले नहीं रहे । दुनिया की किसी भी शक्ति को, मानव के महत्वपूर्ण बुद्धि को भी मरे हुए इंसान को वापस दिलाने का रास्ता पता नहीं है । गाड़ी रुक गई सब लोग नीचे उतर कर अंतिम संस्कार के लिए रवाना हो गए । कुछ लोग जोर-जोर से रोए । कुछ आँसू बहाए । अरुण रोया तो नहीं था मगर उदास था । सारे कार्य करने पर वापस अपनी गाड़ी में जाकर बैठकर कुछ सोचने लगा ।

श्मशान घाट में आनेवाले सारे मृत शरीर को जलानेवाला वह व्यक्ति, वह भी तो मानव है । बिना किसी संकोच के सारे मृत शरीरों को छूकर, उनके अंतिम

यात्रा में जो भी कार्य करना है वह सब करके, रिश्तेदारों से करवाकर भी उसके चेहरे पर कभी कोई दुख दिखाई नहीं दे रहा है । मानव के मृत शरीर को सजी हुई गाड़ी में लेकर आने वाला वह व्यक्ति भी मानव ही तो है । लेकिन वह भी किसी प्रकार से कोई अनिष्ट भावना नहीं जताता है । कोई काम करने से ना कहता भी नहीं है । भले ही उनको इस काम के लिए पैसे दिए जाएँगे लेकिन एक बहुत बड़े मुनि संत के बराबर यह लोग अपना काम कर रहे हैं । किसान, मजदूर, सड़कों में भीख लेनेवाले लोग भी अपनी जिंदगी को ऐसे तैसे आगे बढ़ाते रह रहे हैं । किसी न किसी तरह अपनी जिंदगी को यह लोग जी ही लेते हैं ।

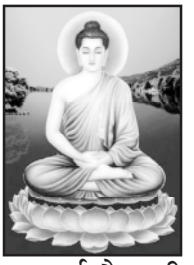
मेरा यह ड्राइवर महीने में उसे 30000 का वेतन दिया जा रहा है । मैंने आज तक कभी भी उसके चेहरे पर उदासी की एक झलक भी नहीं देखा है । जब कभी आता है शांत चित्रक होता है और चेहरे में एक हंसी बन कर रखता है । मेरे यहाँ जितने भी नौकर काम करते हैं पता नहीं उनके घर पर उनका उनके पीछे क्या हो रहा होगा लेकिन मेरे साथ या लोगों के सामने खिले हुए चेहरे लेकर काम किया करते हैं । इन सबको अपना जीवन जीना आता है । यह अपने जीवन को अपने माँ के हिसाब से चला रहे हैं ।

मेरे पिताजी तो महान है हर पल हमारी बड़ोती या हमारे कंपनी की बड़ौती के बारे में सोच सोच कर अपने जीवन समाप्त कर चुके हैं । इतनी मेहनती और उन्नति के स्वरूप को हम दूसरी जगह देख नहीं सकते । लेकिन उन्होंने कभी भी अपनी जिंदगी को अपने लिए जीना नहीं चाहा ।

अरुण को अब लगा कि उसे अपने बीवी बच्चों के साथ थोड़ा समय बिताना चाहिए । बहुत कमा चुका है और जितना कमा चुका है उसको वह निसंदेह और बढा भी सकता है । लेकिन अब वह पैसों के पीछे इतना नहीं भागा जितना उसके पिताजी भाग रहे थे । जीवन को जगत में आनेवाले हर जीव जंतु जी लेते हैं । पशु पक्षी ही नहीं छोटे-मोटे कीटाणु भी अपनी जिंदगी को अपनी इच्छा के अनुसार जी लेते हैं । मैं भी अपने लिए और अपने परिवार के लिए जीना शुरू करूँगा । पैसे तो आते रहेंगे लेकिन हमें इस जिंदगी के रंग को पहचानना और उसे और रंगमई बनाना होगा । ड्राइवर के बुलाने पर उसके विचार तरंगे टूट गई और अपनी नई जिंदगी को उसी दिन से शुरू करने के लिए अरुण घर के अंदर जाने लगा ।



बुद्ध-जयंती पर विशेष : भगवान बुद्ध



– डॉ. परमानन्द लाभ,
समस्तीपुर, बिहार

भगवान बुद्ध का अवतरण आज से लगभग ढाई हजार साल पूर्व वैशाखी पूर्णिमा के दिन नेपाल की तराई कपिलवस्तु नगर के राजा शुद्धोदन की रानी माया के गर्भ से माता के मायके जाने के मार्ग में शालवन में हुआ था । वे जन्म धारण करते ही तत्क्षण सात डग चले थे । अल्पावस्था में ही उनकी माता स्वर्ग सिधार गई थी । फिर, उनके पिता ने पुनर्विवाह किया और सौतेली माँ का व्यवहार उनके प्रति स्नेहात्मक था । माता ने बालपन में बड़े लाड–प्यार से उनका पालन–पोषण किया तथा बड़े होने पर गुरुवत् उसी प्रतिष्ठा की दृष्टि से उन्हें देखा ।

भगवान बुद्ध विवाह कर कुछ समय के लिए गृहस्थ धर्म स्वीकार तो किये, परंतु बाद में सन्यास का धारण किए ।

भगवान बुद्ध को वृद्ध, बीमार व मृतक के दर्शन होने पर प्रबल वैराग्य हुआ । शायद सूखी सलाई पर मात्र एक काठी के रगड़ की आवश्यकता थी ।

भगवान बुद्ध छः सालों तक वन में कठोर तपस्या करने के पश्चात जान सके कि इससे अभिष्ट मंजिल की प्राप्ति नहीं हो सकती ।

भगवान बुद्ध को गया में एक वट–वृक्ष के तले परम सिद्धि मिली । इस प्रकार इनका आविर्भाव गंगा के उत्तरी पार और अभय सिद्धि गंगा के दक्षिणी पार में हुई ।

भगवान बुद्ध ने ध्यान करने तथा पंचशील के पालन करने का उपदेश दिया । उन्होंने बुद्ध, धर्म और संघ के शरण में जाने की बात बताते हुए कहा –

बुद्धं शरणं गच्छामि ।
धम्मं शरणं गच्छामि ।
संघं शरणं गच्छामि ।

भगवान बुद्ध ने डाकू अंगुलिमाल और वेश्या आम्रपाली का उद्धार किया ।

साथ ही पैदल घूम-घूम कर देश और देश के बाहर अपने धर्म का प्रचार किया । मनुष्य मात्र को सद्ज्ञान दिया ।

कुछ विद्वानों का कहना है कि भगवान बुद्ध ने वेद और ब्रह्म को अस्वीकार किया तथा भिक्षुओं-भिक्षुणियों की संख्या बढाई । उन्होंने अपने अनुयायियों को मौखिक उपदेश दिया ।

बुद्ध की मैत्रीपूर्ण भावना सबों के लिए आदरणीय है । उनका स्पष्ट मानना था कि शांतिपद के जिज्ञासुओं को सहनशील, मधुरभाषी और निरहंकारी होना चाहिए । हमारा आचरण कदापि ऐसा नहीं होना चाहिए, जिससे सज्जनों की दृष्टि में हम दोषी हों । सबों के सुख और आनंद की कामना करनी चाहिए । सदैव सबों के प्रति अपने अंदर मैत्री भावना रखनी चाहिए ।

भगवान बुद्ध का लोगों के लिए सलाह है कि वे अंदर की ज्योति जलाएँ, ब्रह्मचर्य का पालन करें । यही सच्ची शुद्धि है । स्वयं का दमन करने पर ज्योति की प्राप्ति होती है, जो सच्ची आत्मशुद्धि है । समस्त प्राणियों का कल्याण उनकी कामना थी । सभी पदार्थ अनात्म हैं ।

इस प्रकार देखा जाता है कि अहिंसावतार व करुणावतार भगवान बुद्ध का अनुभव कहता है कि जीवन है तो दुःख भी उसके साथ लगा ही रहेगा । दुनिया में दुःख से छुटकारा नहीं मिल सकता, पर उससे ऊपर उठा जा सकता है । इसी निमित्त उन्होंने गया में जिस निर्वान की राह खोजी, उसे जन-जन तक पहुँचाने का काम किया । पंचशील अपनाते हुए आसक्तियों से मुँह मोड़ने और राग-द्वेष से दूर रहने की शिक्षा दी ।

भगवान बुद्ध ने दया और करुणा बाँटने तथा मध्यम मार्ग अपनाने पर जोर दिया । वाणी, आहार, शयन व भोग आदि में संयम बरतने की सलाह दी ।

सारत: यह कहा जा सकता है कि उनके ज्ञान अनुभवजन्य और आत्मज्ञान पर आधृत थे । उनका उद्घोष था - मैंने तुम्हें दुःख की प्रकृति उससे मुक्ति की उपाय बताया है और यही ज्ञान निर्वाण को प्राप्त कराता है । अतएव, बुद्ध जयंती के अवसर पर हम उनके पावन चरणों में शत-शत प्रणाम अर्पित करते हुए सज्जनों से आग्रह करते हैं कि वे संतुलित रहकर स्वयं सोचें और सदाचार सम्बन्धी निर्णय लें और निर्वाण प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ें ।



बोध कथा

सही कीमत

– श्री. राजेन्द्र परदेसी,
लखनऊ, उ.प्र.

रायगढ़ मे एक जौहरी रहता था । वह बड़ा गुणी और पारखी था । किसी चीज को एकबार देखकर ही उसका सही मूल्य बता देता था । इसी कारण उसके पास दूर-दूर से लोग अपनी वस्तु का वास्तविक मूल्य जानने के लिए आते रहते । धीरे-धीरे उसकी चर्चा वहाँ के राजा तक पहुँची । राजा ने जौहरी के गुण की परीक्षा लेने का निर्णय लिया । राजा ने उसे अपने दरबार मे उपस्थित होने का आदेश दिया ।

राजा के आदेश पर जौहरी दरबार में उपस्थित हुआ । वहाँ राजा ने जौहरी को बैठने के लिए आसन दिया । फिर अपने बगल में बैठे राजकुमार की ओर इशारा करके कहा – मैं जानना चाहता हूँ कि मेरे राजकुमार की वास्तविक कीमत क्या है ?

राजा का आदेश सुनकर जौहरी बहुत असमंजस में पड़ गया । उसने कभी किसी व्यक्ति का मूल्यांकन नहीं किया था । वह मन ही मन सोचने लगा कि मैं राजकुमार की कीमत क्या बताऊँ, अगर कीमत कम हुई तो राजा नाराज होकर दंडित कर देगा । अधिक होने पर क्या होगा पता नहीं, जौहरी कुछ देर तक इसी सोच विचार मे पड़ा रहा फिर बोला – राजन ! काम थोड़ा मुश्किल है, इसलिए आप मुझे एक सप्ताह का समय दें ।

ठीक है, एक सप्ताह की मोहलत दी जा रही है, लेकिन एक सप्ताह में आकर राजकुमार की सही कीमत नहीं बतायी तो लोगों को ठगने के आरोप मे मृत्युदंड दिया जाएगा', राजा ने कहा ।

राजा की बात सुनकर जौहरी अपना घर चला गया । दो तीन दिन तक वह यही सोचता रहा कि आखिर राजकुमार की सही कीमत कैसे बतायी जाये, जौहरी को दो-तीन दिनों से परेशान देख, उसके पिता से रहा नहीं गया तो उसकी परेशानी का कारण जानने के लिए पूछा – बेटा ! क्या बात है जो तुम इधर दो तीन दिन से परेशान नजर आ रहे हो ?

जौहरी ने अपनी समस्या बतायी तो उसके पिता बोले – तुम व्यर्थ में चिंता कर रहे हो । राजकुमार का मूल्य बताना बहुत आसान है । कल तुम राजा के सम्मुख जाकर कहना – राजन ! राजकुमार के ललाट पर जो रेखायें भाग्य ने खींच दी है उसकी कीमत तो कोई लगा नहीं सकता, परन्तु उन्हें हटा दिया जाये, तो राजकुमार की सही कीमत दो कौड़ी की भी नही है' ।

दूसरे दिन जौहरी दरबार मे उपस्थित हुआ तो राजा ने पूछा – राजकुमार की सही कीमत मालूम कर ली ?

जौहरी बोला – हाँ राजन ।

सही कीमत क्या है ? राजा ने पूछा ।

जौहरी राजकुमार के ललाट पर उँगलियाँ रखकर पिता की कही बातों को दोहरा दिया ।

राजा सोचने लगा कि जौहरी ने सही कहा है कि भाग्य की कीमत कोई नहीं लगा सकता, जिसके कारण मेरा बेटा राजकुमार बन सका है । परन्तु आम आदमी की तरह उसे काम करके जीना पड़े तो शायद ही दो कौड़ी कमा सके ।

जौहरी के मूल्यांकन से राजा बहुत खुश हुआ, उसके गुणों की प्रशंसा की । और ढेर सारा पुरस्कार देकर विदा किया ।



प्रणाम

– श्री. मोहित.जे. संतोष, श्री रामकृष्ण कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, कोवै, तमिलनाडु

हमारे फौजियों को प्रणाम
देश के सेनानियों को प्रणाम
आपसे हुआ आपरेशन सिंदूर
रख दिया दुश्मनों को अति दूर ।
हमारी नींद का कारण जवान है
हमारी रक्षा का कारण जवान है
ये जवान सदा ही महान हाँ है
हमारे सारे जवान सदा महान है ।
पहलकाम में जो हुआ था हमला
उसका हाँ खूब लिया है बदला
उन माताओं के आँसू का बदला
आपरेशन सिंदूर ने पूरा पूरा लिया ।
हमारा देश सदा ही महान है
फौजी अपने सदा ही महान है
चलो अब सब अपना हाथ मिला
जोर से कहो दिल से कहो जयहिन्द ।



बाल कहानी

क्रोध का परिणाम

– श्री. प्रिया देवांगन 'प्रियू',
गरियाबंद, छत्तीसगढ़

कुणाल के माता–पिता मध्यम वर्गीय परिवार से थे । कुणाल उनकी इकलौती संतान थी । जिसके कारण वे उसे बहुत लाड प्यार करते थे । उसे किसी भी चीज की कमी ना हो इस बात का पूरा ख्याल रखते थे । उसके कुछ माँगने के पहले ही उसकी हर जरूरत को पूरा कर देते थे । माता–पिता के इसी परवरिश ने कुणाल को जिद्दी बना दिया था । बचपन में उसके शौक आसानी से पूरे हो जाते, लेकिन अब कुणाल बड़ा हो रहा था और वह महँगी चीजों की ज़िद करने लगता । कभी महँगी साइकिल लेने को कहता, तो कभी वीडियो गेम; कभी घरवालों के साथ घूमने जाता तो महँगी चॉकलेट खरीदने को कहता । अब उसके माता–पिता उसकी ज़रूरत को पूरा करने के लिए असमर्थता जताने लगे, जिससे कुणाल चिड़चिड़ा होने लगा । कुणाल अब आठवीं कक्षा में था ।

एक दिन उसने अपनी कक्षा के एक साथी रोहन को स्मार्ट वॉच पहने हुए देखा । पहले उसने रोहन से उस वॉच की खासियत पूछी । उसके बाद वह उसे पहन कर देखने की ज़िद करने लगा । रोहन ने मना कर दिया; जिससे कुणाल आग बबूला हो उठा । वह रोहन से झगड़ने लगा और उसने पास पड़े पत्थर को उठाकर रोहन की वॉच पर दे मारा । रोहन की कीमती घड़ी टूट गई; यह सब वहाँ पर खड़े पीटी टीचर ने देखा तो कुणाल को लेकर प्रिंसिपल के पास गए । प्रिंसिपल ने कुणाल को एक हफ्ते के लिए स्कूल से बाहर कर दिया ।

कुणाल का गुस्सा अभी भी सातवें आसमान पर था । उसने घर जाकर पापा से वैसे ही वॉच दिलाने को कहा जिस पर पापा ने उसे मना कर दिया । मना करते ही कुणाल ने गुस्से में पास रखे हुए पापा के अत्यंत महत्वपूर्ण फ़ाइल को भी फाड़ दिया, जिसमें उनके काम के कई प्रोजेक्ट लिखे हुए थे । अब तो पापा ने उसे खूब डाँटा और अगले दिन उसके स्कूल से उसकी टीसी निकलवा कर बोर्डिंग स्कूल में भर्ती करवा दिया । वहाँ कुणाल अकेला रहने

लगा । उसे अपना सारा काम स्वयं करना पड़ता था और कोई उसे अपना दोस्त भी नहीं बनाना चाहता था । अब धीरे-धीरे कुणाल को अपनी की हुई गलतियों पर पछतावा हो रहा था लेकिन अब देर हो चुकी थी ।

इसीलिए श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है-

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ।।

अर्थात् क्रोध से सम्मोह होता है, सम्मोह से स्मृति का विभ्रम होता है । स्मृति के भ्रम से बुद्धि का नाश होता है, और बुद्धि के नाश से व्यक्ति का सर्वनाश हो जाता है ।



लघुकथा

सिकुड़ती संवेदनाएँ

- डॉ. पी.आर. वासुदेवन शेष,
चेन्नै, तमिलनाडु

सड़क के दोनों ओर भारी भीड़ इक्ठठी हो गई थी । मैं उधर से गुजर रहा था तो मैंने देखा कि एक नवयुवक खून से लथपथ औंधे मुँह सड़क पर गिरा पड़ा है । मेरा अनुमान शायद सही था । किसी तेज़ गुज़रते वाहन ने उसकी दुपहिया को टककर मारी और चल दी, लेकिन वहाँ खड़ी भीड़ में से एक भी व्यक्ति उसे अस्पताल ले जाने की बात नहीं कर रहा था ।

ये कैसे हुआ ? क्या हुआ ? यही आपस में बोल रहे थे । नशे में होगा, दूसरा झट बोला, गाड़ी तेज़ चला रहा होगा, तरह-तरह के लोग तरह-तरह की बातें कर रहे थे । पुलिस को भी इस घटना की सूचना दी गई, लेकिन पुलिस एक घंटे के बाद भी घटना स्थल पर नहीं पहुँची और पीड़ित ने आखिर सड़क पर ही दम तोड़ दिया ।

प्रशासन और पुलिस के इस गैर जिम्मेदाराना कार्य पर सभी विपक्षी पार्टीवाले छींटाकसी कर रहे थे, लेकिन किसी ने भी उसकी मदद करने के लिए पहल नहीं की । मुझे लगा कि क्या मानवीय संवेदना सिकुड़ चुकी है । क्या इन्सान इतना सस्ता हो गया कि अब उसकी कोई अहमियत नहीं रह गई ?



कामचोर

– डॉ. शिखा अग्रवाल,
सीकर, राजस्थान

सुरभि अभी बाजार से लौटी तो रिक्शेवाले को देने के लिए उसके पास खुले रुपये नहीं थे । इस समय धूप भी तेज़ हो गई थी । ऐसे में सुरभि ने उसका उम्र और मेहनत को देख कर बचे रुपए छोड़ना चाहे तो रिक्शेवाले ने एक्स्ट्रा पैसे रखने से इनकार कर दिया और थोड़ी दूरी पर बनी डेयरी से रुपये खुलवा लाया । बाजार से आकर वह खाना लेकर बैठी ही थी कि बाहर से तेज आवाज आई, सेठानी, ओ सेठानी, ओ माई, रोटी दे दे बिना रुके गला फाड़ कर चिल्लाती हुई आवाज़ से खाना उसके गले में ही अटक गया । सुरभि रोटी देने बाहर आई तो देखा कि मैले कुचैले कपड़ों में आठ दस साल के लड़के के साथ एक लड़की खड़ी थी । उसे देखते ही लड़की ने कपड़े और आटा देने की गुहार लगाई । सुरभि ने थोड़ा आटा और दस रुपये लाकर लड़की को थमा दिए ।

अगले दिन लगभग उसी समय फिर खाना माँगने की आवाज आई । उसने रोटी तो दे दी पर बच्चे के जाने के बाद उसने खिड़की से झाँक कर देखा तो वह बच्चा रोटी को एक औरत की पोटली में रख रहा था । अगले दिन जब फिर वहीं खाने की गुहार आई तो उसने बच्चे से माँ को बुलाने के लिए कहा । कुछ ज्यादा मिलने की आशा में माँ तुरंत आ गई । सुरभि ने उसे घर के बाहर की सफाई करने के बदले में रुपये और रोटी देने की बात कही । देना हो तो दो, हमारा समय खोटा मत करो वह भिखारिन सुरभि को गुस्से में अपशब्द कहती हुई तेजी से आगे बढ़ गई । उसके दिमाग में दो दिन पहले मिला ईमानदार रिक्शा चालक घूम गया जो मेहनत की कमाई से एक भी पैसा ज्यादा लेने को तैयार नहीं था वहीं उस हट्टी कट्टी कामचोर महिला का व्यवहार उसे अवाक कर गया जो अपने बच्चों को भी कामचोर बना रही थी ।



संस्कृति का स्वर

– श्री. अवनीश कुमार गुप्ता
'निर्द्वंद', प्रयागराज, उ.प्र.



परंपरा की जोत जले, घट-घट में बस जाय,
पथ पर जो विचलित होवे, सत्य दिखावे राह ।
रीति-रिवाज न छोड़िये, मन में ज्ञान धरे,
जग की निसा में डूबे, जो परंपरा से डरे ।



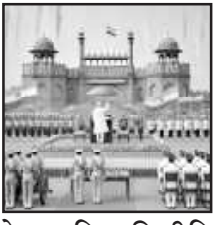


संस्कृति का दरपन देखो, मन के भीतर झाँक,
नृत्य-गीत की बंसी बजे, मुरली मधुर सुनाय ।
त्याग की जो भव्य छवि है, संस्कृति उसका रूप,
धीरज धर के जो जिये, वही सच्चा मनुज ।

त्योहारों में जो मिले, सब जीव एक समान,
दीपक से दीपक जले, होवे उजियारा गान ।
हर रंग में प्रेम बसे, हर धुन का हो नाद,
त्योहारों की इसी धारा से पावन हो संसार ।







एकता का बीज बो, मन के खेत में प्रेम,
जात-पात का भेद तज, हर मानव में देख ।
सबका जीवन एक रंग, सबके मन में मान,
जिसको समता भाव मिला, वह है सच्चा ज्ञान ।

देश भक्ति की रीति है, मन में प्रेम बसा,
तिरंगा जो हाथ में ले, उसका जीवन सजा ।
प्रेम तज के राज न मिले, जहाँ प्रेम वहाँ शांति,
देश प्रेम में खो जा तू, यही असल की बात ।



चेतनता का दीप जल, हर मन में विश्वास,
अपने देश का मान रख, सबका यही प्रयास ।

छोटा-बड़ा जो भेद करे, जीवन का व्यर्थ हाल,
चेतनता का धागा सुथरा, सबको एक समान ।



मानवता का प्रेम बड़ा, ना जात ना पात का हो,
सब जीवों में परमात्मा, यही सत्य की जोत ।
जिसने यह पहचान लिया, वही सच्चा ज्ञानी,
मानवता से ऊँचा नहीं, कोई धर्म या प्राणी ।



देश प्रेम का रंग चढ़ा, जैसे गाढ़ा रंग,
जब देश की सेवा मिले, वह कर्तव्य का संग ।
तज मोह माया और लोभ, जो सेवा में लीन,
उसका नाम अमर रहे, यह धरती का प्रीत ।

गज़ल

– श्री. संजय कुमार गिरि,
दिल्ली

फूल कुछ उनके किताबों में छिपाकर रख दिए
राह के पत्थर सभी मैंने हटाकर रख दिए

चाँद से मुखड़े पे उनके दो नयन ऐसे लगें
जैसे पूजा में कमल के गुल सजाकर रख दिए

लौटकर आए हैं रघुवर फिर अयोध्या धाम में
उनके स्वागत में मैंने, सौ-सौ दिवाकर रख दिए

क्या कभी तुमको लगी थी मेरे निश्छल प्यार में
आज जो मेरे नयन तुमने भिगाकर रख दिए

जो लिखे थे खत कभी मैंने तुम्हारे प्यार में
आज टूटे दिल ने सारे खत जलाकर रख दिए



आज फिर कोई परिंदा आ फंसेगा जाल में
जाल जंगल में शिकारी ने बिछाकर रख दिए

छोड़कर जाना है 'संजय' को जहाँ ये एक दिन
इसलिए यादों के सब टोकन मिटाकर रख दिए

कागज के फूल

– श्री. सूबेदार कृष्णदेव प्रसाद सिंह, मधुबनी, बिहार

कागज के फूल, बनावट के उसूल समान होते हैं,
जो खुश होते देखकर, धोखे में वे इंसान होते हैं ।
न इनमें कोई खुशबू होती, और न कोई मुस्कान,
जो हँसना चाहते देखकर, हँसी से अनजान होते हैं ।
कागज के फूल...



हँसना मुस्कुराना क्या जाने ये निर्जीव फूल कभी,
वास्तव में ये किसी चमन के लिए बेईमान होते हैं ।
जो हँसना, रोना, मुरझाना न जाने, वो फूल कैसे ?
फूल बागों में खिलते, तोड़ने पर कुर्बान हो जाते हैं ।
कागज के फूल...



ये कृत्रिम हाथ पैर से ज्यादा कुछ नहीं होते कभी,
दिल को छू नहीं पाते, आँखों पर मेहरबान होते हैं ।
सच्चाई छुपाने के ये तो, असफल प्रयास करते हैं,
जिसके साथ भगवान नहीं हैं, वो नादान होते हैं ।
कागज के फूल...



क्या कोई नारी अपने बालों में सजाती है इसको ?
ये फूल केवल, कारखाने में बने मेहमान होते हैं ।
क्या पुजारी पंडित पूजा में भगवान को चढ़ाते हैं ?
सजावट से प्रभु नहीं, प्रसन्न सिर्फ इंसान होते हैं ।
कागज के फूल...



राष्ट्र प्रथम

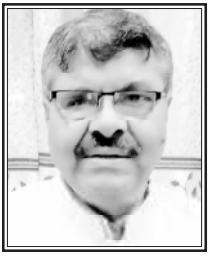
– श्री. गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ, उ.प्र.

सदा जीत का दम रखते हैं ।
मन में राष्ट्र प्रथम रखते हैं ।
सभी समस्याएँ निपटा लें
अपने को सक्षम रखते हैं ।

शासन-सत्ता सुख पाकर भी
भाव उच्च-उत्तम रखते हैं ।
घातक है ईर्ष्यालु पड़ोसी
बोलचाल कुछ कम रखते हैं ।
राजा बनें दशानन जैसा
व्यर्थ न मिथ्या भ्रम रखते हैं ।
आतंकी असुरों की क्षय हित
खड्ग, चक्र, अणुबम रखते हैं ।
भारतमाता के सपूत हम
ऋषियों-सा संयम रखते हैं ।

आगाज (सर्जिकल स्ट्राइक पर)

– श्री. गिरेन्द्रसिंह भदौरिया 'प्राण',
इन्दौर, म.प्र.



यह तो बस टंकार धनुष की, अभी बाण सन्धान शेष है ।
निकली है तलवार म्यान से अभी रक्त का पान शेष है ।।
सहन शक्ति को जिसने अब तक कायरता ही समझ रखा था,
उससे कहो कि यह तो केवल हवा चली तूफान शेष है ।।

वीरव्रती की विनती को ठुकराने का परिणाम मिलेगा ।
दृढ़ निश्चय है कापुरुषों को अब अन्तिम अंजाम मिलेगा ।।
निर्दोषों के वध के बदले चीत्कार कोहराम मिलेगा ।
ऐसा दण्ड कि अब तक हमने सुना नहीं अविराम मिलेगा ।।

महाकोप में महाकाल का नेत्र तीसरा खुला नहीं है ।
रणचण्डी का खप्पर खाली है लोहू से भरा नहीं है ।।
एक देश क्या धरती अम्बर थर्रायेंगे भीषण रण से,
अणु परमाणु बमों का ध्वंसक राग ककहरा खुला नहीं है ।।

धीर वीर गम्भीर हो चुके अभी हँसी मुस्कान शेष है ।।
अट्टहास भी होगा उससे पहले का जयगान शेष है ।।
यह तो बस टंकार धनुष की, अभी बाण सन्धान शेष है।।
उससे कहो कि यह तो केवल हवा चली तूफान शेष है ।।

माना छल प्रपंच ने उसको चोंच चलाना सिखा दिया है ।
इसी आड़ में उसने खुद को नामी नभ चर लिखा लिया है ।।
तन से मन से काले कौए के गुर्दे में दम कितना है !
जितना ऊँचा उड़ सकता था उतना उड़ कर दिखा दिया है ।।

कुप्पे जैसा फूला पेंदी रहित एक लोटा लगता है ।
देता है हर बार चुनौती हँसों को खोटा लगता है ।।
फिर भी लक्ष्य साधकर केवल साँस भरी हडकम्प मच उठा,
जब बारी अपनी आई तो आसमान छोटा लगता है ।।
अभी पंख भर फैलाए हैं पूरी अभी उड़ान शेष है ।।

यह तो बस टंकार धनुष की, अभी बाण सन्धान शेष है ।।
उससे कहो कि यह तो केवल हवा चली तूफान शेष है ।।



गीत

– श्री. मनोहर सिंह
चौहान मधुकर,
जावरा, रतलाम, म.प्र.





सारी दुनिया ने तुझे निहारा, सारी दुनिया ने तुझे सराहा ।
जो देखा देखा तेरा जलवा, सारे जगत ने तुझे चाहा ।।
तेरी जय हो तेरी विजय हो, हरदम मेरा सबका यही कहना
जय हो मेरे देश की सेना, जय हो भारत देश की सेना ।।

अब तक जितने भी युद्ध लड़े उन सब में हमने जीत पाई है ।
हरदम हारा है दुश्मन नासमझ फिर भी समझ नहीं आई है ।।
अपने घर में शांति से रह ले, सबका तुझसे इतना ही कहना ।
जय हो मेरे देश की सेना । जय हो भारत देश की सेना ।।

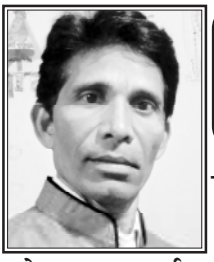
जल में थल में और नभ में हमने, अपनी शक्ति तुझे दिखा दी है ।
जहाँ–जहाँ सोचा था हमने उसी, जगह पर मिसाइल गिरा दी है ।।
दुश्मन अपना अगर भला चाहे, तो इस सेना से बच कर रहना ।
जय हो मेरे देश की सेना । जय हो भारत देश की सेना ।।



जब धुआँ उठा गाँव शहर जले, बच्चे बूढ़े सारे चीखे रोए ।
तुमने परिवार बाहर भेजा, खुद घूमे बेशर्म मूँछ मरोड़े ।।
तेरे शस्त्र खिलोने निकले, अब मेरे शस्त्रों से बचकर रहना ।
जय हो मेरे देश की सेना, जय हो भारत देश की सेना ।।

देश का सिर ऊँचा कर दिया, प्यारी सेना तेरे बलिदानों ने ।
हम सब भारतवासी नतमस्तक है प्राण त्यागे जिन जवानों ने ।।
उन वीरों पर बलिहारी जाए, जो बने भारता माता के गहना ।
जय हो मेरे देश की सेना, जय हो भारत देश की सेना ।।

कविता की मधुरता शब्द में भी है, भाव में भी है ।



पर्यावरण से मत कर खिलवाड़

– श्री. अशोक पटेल 'आशु',
शिवरीनारायन, छत्तीसगढ़

अरे इन्सान पर्यावरण से मत कर तु खिलवाड़
पेड़–पौधों को काटकर, क्यों करता है उजाड़ ।
इन्ही पेड़–पौधों से होती है वसुंधरा का श्रृंगार
यही है सारे जीव–जगत का, सुंदर वन विहार ।

ये पेड़–पौधे हमारे, हितैषी और शुभचिंतक हैं
इनके बिना हमारा, जीवन बेकार निरर्थक है ।
यही तो हमारे जीवन के आधार मार्गदर्शक हैं
इनसे ही तो यह जीवन सफल और सार्थक है ।

विकास की आड़ में विध्वंस को नही बुलाएँ
प्रकृति से खिलवाड़ करके फर्ज नही भुलाएँ ।
जैसा भी हो प्रकृति से, जरूर संतुलन बनाएँ
प्रकृति का संरक्षण करें, इसको गले में लगाएँ ।

अभी न सम्हलेंगे और इनसे खिलवाड़ करेंगे
तब हमें भयानक परिणाम भी, भुगतने होंगे ।
जमीन–आसमान, पर्वत–पठार हिम ये दहलेंगे
ये धरती काँपेगी, भूकंप आएगा, बादल फटेंगे ।

और धरा में भयानक काल–कयामत आएगी
सब जीव–जगत को अपने आगोश में ले लेगी ।
और फिर इस मानव को, करनी याद आएगी
भूल सुधारना चाहेगा पर बहुत देर हो जाएगी ।

गणपति वंदन



– श्री. संजय शर्मा, आगरा, उ.प्र.

कृपाण घनाक्षरी

नमो–नमो वक्रतुण्ड,
पाप का उखाड़ो मुंड,
बैरियों के तोड़ डालो,
षड़यंत्रवाले जाल ।

पापी डर जाएँ सारे,
भागे फिरें मारे–मारे,
शिव सुत ऐसा रूप,
धारो बन महाकाल ।

धरती भी पावन हो,
खुशहाल आँगन हो,
दुष्ट कोई कर पाए,
नहीं इसे कभी लाल ।

वंदना मैं करता हूँ,
शीश पग धरता हूँ,
मेरी प्यारी अवनि को,
कर डालो खुशहाल ।



कुंडलियाँ छंद

– श्री. सुशील शर्मा,
नरसिंहपुर, म.प्र.

– 1 –

नारी का अभिमान है, माँग भरा सिंदूर ।
यदि संकट में आ गया, सब खुशियाँ काफूर ।
सब खुशियाँ काफूर, इसे गर नहीं बचाया ।
जीवन होगा व्यर्थ, व्यर्थ यह नर की काया ।
उठो हिन्द के शेर, लगा दो ताकत सारी ।
पहलगाम का न्याय, माँगती है अब नारी ।

– 2 –

सीमा पर फिर से भरी, शेरों ने हुँकार,
वीरों ने फिर कर दिया, दुश्मन का संहार ।
दुश्मन का संहार, हिली वसुंधरा सारी,
ध्वस्त हुआ नापाक, गूँजती जय जयकारी ।
जली क्रोध की ज्वाल, बनाया दुश्मन कीमा ।
जय भारत के वीर, सुरक्षित है अब सीमा ।

– 3 –

दिखलाया है देश ने, क्या होता प्रतिकार ।
पल भर में ही कर दिया, दुष्टों का संहार ।
दुष्टों का संहार, शौर्य सीने में उबला ।
हुए ठिकाने ध्वस्त, साँप को बिल में कुचला ।
किया सफाया पूर्ण, सबक उसको सिखलाया ।
भारत शक्ति महान, जगत को यह दिखलाया ।



दस हाइकु

– डॉ. मंजुमणि शइकीया,
लक्षीमपुर, असम

ऋग्ण शरीर
असंतुलित मन
दुखी हृदय
डरना नहीं
विपदा के समय
ईश्वर साथ

रूग्ण अवस्था
सकारात्मक सोच
दवा समान
बुरा समय
डरावना होगा
हिम्मत रखो

अपने कर्म
वापस आ जाता है
अपने पास ।
जिन्दगी राह
उताड़–चड़ाव का
हैं समन्वय ।

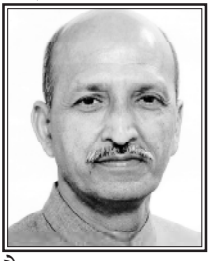
वक्त के साथ
जरूरी है चलना
आगे बढ़ेगा ।
चिंता की रेखा
शरीर–मन पर
झलक रहा ।

सावन आया
घटा भरा आकाश
धरती सुखी ।
रम्य प्रकृति
सुहावने मौसम
वसंत ऋतु ।

अक्सर

– डॉ. अनन्त कीर्ति वर्द्धन, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

किसी आम का
ख़ास बन जाना
बढ़ा जाता है दूरियाँ ।



खुलकर मिलना
हँस कर मिलना
राह में चलते
बातें करना
सब
कहीं खो जाता है ।

अक्सर
किसी आम का
ख़ास बन जाना
बढ़ा जाता है दूरियाँ ।

वो बेतकल्लुफी की बातें
झलकता था अपनापन
सिमट जाता था दायरा
कहने सुनने का
मिट जाता था खारापन ।

अक्सर
किसी आम का
ख़ास बन जाना
बढ़ा जाता है दूरियाँ ।

रिश्तों के दरम्याँ
जमने लगती है बर्फ
अनचाहे और अन्जाने ही
उगने लगती है
नागफनी की झाड़ियाँ
जब आदमी
आदमी नहीं रह जाता
बस
आम से खास बन जाता ।
उसका अपनापन
उलझ जाता है
नागफनी में ।

अक्सर
किसी आम का
ख़ास बन जाना
व्यवहार में
बढ़ा जाता है दूरियाँ ।



ग़ज़ल

– श्री. प्रेम विज, चंडीगढ़

कश्ती डूब के फिर भी निकल सकती है,
शमां राख हो के भी जल सकती है ।
तूफ़ानों से लड़कर जो चल सकती है,
वो ही तो ज़मीन पर मिसाल सकती है ।
जो गिर के सँभल जाए हर वार पर,
वही चोट खा कर भी ढल सकती है ।
उम्मीद की लौ हो अगर दिल में तेरे,
तो सूनी अँधेरों में हल सकती है ।
जो हारा नहीं खुद से हर दौर में,
वो तक़दीर अपनी बदल सकती है ।
प्रेम बनी है ये हिम्मत की राह,
जो मिट कर भी हर रंग मल सकती है ।

प्यारा होता है संयुक्त परिवार

–श्री. मोनिका डागा
'आनंद', चेन्नै, तमिलनाडु



बरसता जहाँ प्रेम स्नेह, आशीष अपार,
बड़ा ही प्यारा होता है संयुक्त परिवार ।

बहुमूल्य आचरण के पनपते जहाँ मोती,
अनमोल संस्कारों की चमके वहाँ ज्योति,
धरोहर अपनों की अनुपम जीवन श्रृंगार,
बड़ा ही प्यारा होता है संयुक्त परिवार ।



भरते हैं तन मन के अदृश्य जहाँ घाव,
सुख-दुख की सुनहरी होती वहाँ छाँव,
खट्टी-मीठी सी होती तकरार-मनुहार,
बड़ा ही प्यारा होता है संयुक्त परिवार ।



बचपन नवल सतरंगी रंगत जहाँ पाता,
कठिनाइयों में भी जीवन वहाँ मुस्कुराता,
हो सारे सपने साकार दिया जाता आकार,
बड़ा ही प्यारा होता है संयुक्त परिवार ।



मिलकर खेलना-कूदना होता जहाँ मनोरंजन,
मेहमानों का भी होता वहाँ प्रेम से अभिनंदन,
संवारा जाता कुशलतापूर्वक मधु व्यवहार,
बड़ा ही प्यारा होता है संयुक्त परिवार ।

अनुभव से अंकुरण होता जहाँ बीज का,
चटक रंग होता वहाँ हर त्योहार तीज का,
ममत्व सींचता साहस, सदाचार सदाबहार,
बड़ा ही प्यारा होता है संयुक्त परिवार ।



जुड़ती एक दूजे से जहाँ रिश्तों की कडियाँ,
पूर्ण विश्वास से दमके वहाँ जीवन लडियाँ,
कलयुग में प्रभु से मिला अद्भुत आनंद उपहार,
बड़ा ही प्यारा होता है संयुक्त परिवार ।

बरसता जहाँ प्रेम स्नेह, आशीष अपार,
बड़ा ही प्यारा होता है संयुक्त परिवार ।

சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான்

சபரி பேலஸ், 193, இரண்டாவது அக்ரஹாரம்,
சேலம்-636001. & 0427-4265414 0427-4552100
Website : https://shabari.in

வாணி விகாஸ் – ஓர் பார்வை .....

உங்களின் கேள்விகளுக்கு இதோ எங்கள் பதில்கள் .....

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்குரிய விண்ணப்பப் படிவங்கள் சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தானின் உறுப்பினர்களுக்கு மட்டுமே வழங்கப்படும். வருடாந்திர உறுப்பினர் கட்டணம் ரூ.100/-

வாணி விகாஸ் தேர்வு எதற்காக நடத்தப்படுகிறது ?

வாணி விகாஸ் என்பதின் பொருளிலேயே இந்த வினாவிற்கான விடை இருக்கிறது. ஹிந்தி பேசத் தெரியாதவர்களை ஹிந்தியில் பேசவைப்பதே வாணி விகாஸ் தேர்வின் முதல் நோக்கமாகும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு யாரால் நடத்தப்படுகிறது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வு சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தானால் நடத்தப்படுகிறது.

வாணி விகாஸ் தேர்வு வாய்மொழித்தேர்வா அல்லது எழுத்துத்தேர்வா ?

பேச்சாற்றலை வளர்ப்பதே வாணி விகாஸின் கொள்கையாகும், எழுதுகின்ற வேலை இதில் கிடையாது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கான குறைந்தபட்ச வயது என்ன ?

எட்டு (8) வயது பூர்த்தியடைந்த அனைவரும் வாணி விகாஸ் தேர்வில் பங்கேற்கலாம். வாணி விகாஸ் தேர்வின் முதல் நிலை தேர்வில் பங்கேற்பவர்கள் விண்ணப்பத்துடன் தங்கள் பிறப்பு சான்றிதழ் நகலினை கட்டாயம் இணைக்க வேண்டும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கான அடிப்படை கல்வித் தகுதி என்ன ?

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கென அடிப்படைக் கல்வித் தகுதி ஏதும் தேவை இல்லை.

வாணி விகாஸ் தேர்வு எந்தெந்த மாதங்களில் நடைபெறுகிறது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வு ஜனவரி, ஏப்ரல், ஜூலை மற்றும் அக்டோபர் மாதங்களில் நடைபெறுகிறது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள் எத்தனை நிலைகளைக் கொண்டது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வானது எட்டு நிலைகள் கொண்டது.

வாணி விகாஸ் தேர்விற்கு தனியான பாடப்புத்தகம் உள்ளதா ?

வாணி விகாஸ் எட்டு நிலைகளுக்கும் தனித்தனியே பாட புத்தகங்கள் உள்ளது.

வாணி விகாஸ் தேர்வில் ஒவ்வொரு நிலையாகத் தான் பங்கு பெற முடியுமா ?

ஆம். வாணி விகாஸ் தேர்வில் ஒவ்வொரு நிலையாகத் தான் பங்கு பெற முடியும். ஒரே சமயத்தில் இரண்டு நிலைகளுக்கு விண்ணப்பிக்க இயலாது. நேரடியாக இரண்டாவது அல்லது அதற்கு அடுத்த நிலைக்கோ விண்ணப்பிக்க இயலாது. இரண்டாவது நிலையிலிருந்து எட்டாவது நிலை வரை விண்ணப்பிப்பவர்கள் தாங்கள் தேர்ச்சி பெற்ற முந்தைய நிலையின் 10 இலக்க தேர்வு எண்ணை (10 Digit Exam Register Number) தேர்வு விண்ணப்பத்தில் தெளிவாக எழுதி அனுப்பவேண்டும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு மையங்கள் எங்கெங்கு உள்ளன என்று தெரிந்து கொள்ளலாமா ?

வாணி விகாஸ் தேர்வில் குறைந்தது 30 மாணவர்கள் இருந்தால் உங்கள் இடத்திலேயே தேர்வு மையம் அமைக்கப்படும். அதற்கும் குறைவாக 10 முதல் 29 வரை உள்ள நிலையில் தேர்வுமையக் கட்டணமாக ரூ.500 செலுத்த வேண்டும். **அவ்வாறான நிலையில் மற்றவர்களிடம் பயிலும் ஒரு சில மாணவர்கள் எவ்வித முன்னறிவிப்பின்றி தங்கள் தேர்வு மையத்தில் பங்கேற்பார்கள்.** தேர்வுமையக் கட்டணத்தை எக்காரணத்தைக் கொண்டும் திருப்பித் தர இயலாது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கு மதிப்பெண் பட்டியல் மற்றும் சான்றிதழ் உள்ளதா ?

ஆம், உள்ளது. வாணி விகாஸ் தேர்வு முடிந்து 30 நாட்களுக்குள் தேர்வு மதிப்பெண் பட்டியல் மற்றும் 60 நாட்களுக்குள் சான்றிதழ் அனுப்பி வைக்கப்படும். தேர்வு முடிவுகள் www.shabari.in-ல் வெளியிடப்படும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு யாரால் நடத்தப்படும் ?

சபரியால் தேர்ந்தெடுக்கப்பட்ட அனுபவமிக்க ஆசிரியர்களால் தேர்வு நடத்தப்படும்.

இத்தேர்வுக்கான மாதிரி வினாத்தாள் உள்ளதா ?

பாட புத்தகத்தின் கடைசிப்பக்கத்தில் மாதிரி வினாத்தாள் உள்ளது.

வாணி விகாஸ் தேர்வு மாணவர்களுக்கு பயனுள்ளதா ?

ஹிந்தியின் இமாலய வளர்ச்சி மற்றும் பயனுள்ள பயிற்சியில் மாணவர்கள் நிச்சயம் பலன் பெறுவர்.

புத்தகம் மற்றும் தேர்வுக் கட்டண விபரம் :

தேர்வின் பெயர்	கட்டணம்	தேர்வின் பெயர்	கட்டணம்
வாணி விகாஸ் நிலை-1	₹ 250.00	வாணி விகாஸ் நிலை-5	₹ 290.00
வாணி விகாஸ் நிலை-2	₹ 260.00	வாணி விகாஸ் நிலை-6	₹ 300.00
வாணி விகாஸ் நிலை-3	₹ 270.00	வாணி விகாஸ் நிலை-7	₹ 310.00
வாணி விகாஸ் நிலை-4	₹ 280.00	வாணி விகாஸ் நிலை-8	₹ 320.00

தேர்வுக் கட்டணம் செலுத்துவது எப்படி ?

தேர்வு கட்டணத்தை https://shabari.in என்கிற எங்களது இணையதளத்தின் வாயிலாக மட்டுமே செலுத்தவும்.

வாணிவிகாஸ் தேர்வுகளுக்கு (ஜனவரி [அ] ஏப்ரல் [அ] ஜூலை [அ] அக்டோபர் மாதங்களுக்கான தேர்வுகளுக்கு) குறைந்தபட்சம் ஒரு முகவரி (சபரி IDயில்)10 மாணவர்கள் இருந்தால் மட்டுமே விண்ணப்பங்கள் ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.



महान संत शिव भक्त – तमिल नायनमार

अप्पूदियडिगल नायनार

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार, कोवै, तमिलनाडु

शिव कृपालू शिव है महान कृपालु शिव सा कौन है कृपालू ?
हर हर कहकर हर काम करो दुख हरो धैर्य धरो जीत जाओगे
भक्त प्रिय हैं भोलेनाथ हर रूप से देते हैं भक्तों को वे हाथ
नित्य करो नियमित रूप से करो भोलेनाथ का नाम मन में भरो
शिव का करो तुम आधार शिव भक्ति का करो तुम सम्मान सदा यह मान
यत्र तत्र भक्त पूजे जाते हैं आदर पाते हैं भोलेनाथ वहाँ आ ही जाते हैं
भक्तों में अपने आप को देखकर भोलेनाथ स्वयं प्रकट हो जाते हैं
भक्त की सेवा को भगवान की सेवा महादेव इसे सदा मानते हैं ।

चोल राज्य में पनपन लगे थे अनेकानेक शहर और गाँव तमिलनाडु में
शिवजी की कीर्ति बढ़ाने सहज रूप से भाग लेते थे ये देश भर में
तिन्गालूर नाम था उस प्राचीन प्रदेश का बसा था चोल राज्य में
रहते थे सब परिवार वही अप्पूदियडिगल नायनार मान्य प्रदेश में
करते थे व्यापार धन-धान्य से संपूर्ण थे अप्पूदियडिगल नायनार
शिव महादेव को अपना यह मानते मंदिर में महान दर्शन ये करते
सपरिवार शिव क्षेत्र में जाकर शिवाजी की प्रार्थना ये सदा करते
संत तिरुनावुक्करसर के ये बने भक्त अपने हर काम का नाम उनका देते ।

बनाया था एक बहुत बड़ा तालाब नाम रखा अपने प्रिय स्वामी का
प्यास मिटाने एक खोले थे ठंडे पानी से भरा एक बड़ा आराम निवास
बहुत सारे आते ठंडा पानी पीते बुझा लेते लोग अपना प्यास
इसका भी नाम रखा गया तिरुनावुक्करसर स्वामी उनका
एक बार आए थे घूमने तिरुनावुक्करसर उस गाँव में
हर अच्छे कार्य में अपना ही नाम देखकर पड़ गए वे अचरज में
भक्तों से पूछ कर पता लगा लिए कौन है इस काम के पीछे बिन अपना नाम के
मिलने चले कुछ लोग सहित अपने उस भक्त महात्मा के दर्शन करने ।

शिव भक्त को अपने घर की तरफ आते देख पुलकित हुए नायनार
दोनों हाथ मिलाकर वंदना करते उनको सस्नेह ले आए अपना घर
गुस्सा करना पड़ा उस संत से यह प्रश्न सुनकर नायनार को तब बहुत
अपना नाम ना रख कर किसी और का नाम रखनेवाला ये कौन ?
राजा उसे ले आए साहित्य की तरह जैनों से दूर कर वह महान
भयानक पेट दर्द को दूर कर राजा को आश्वासन दिया महान तब
चोल राज्य उसे शिव के पीछे लाने में काबिल रहे तिरुनावुक्करसर महान
शिव के मार्ग में और कौन मिल सकता है इनसे भी अधिक महान ?

भक्ति के असली रूप को सामने पाकर प्रसन्न हुए नावुक्करसर
अपना परिचय देकर पुलकित हुए तब वहाँ तिरुनावुक्करसर
आनंद विभोर हो गए चरण में अपना सिर बार-बार नमाकर अप्पूदियडिगल
अपने चारों पुत्रों का भी नाम रखे थे तिरुनावुक्करसर एक से चार
पत्नी और पुत्र सहित पांव पड़े विनती किए भोजन स्वीकार करने की
अपने प्रति असीम भक्ति देखकर आनंदित से तिरुनावुक्करसर
केले के पत्ते लेने गया प्रथम तिरुननावुक्करसर अपने बगीचे से
नाग से काटे जाने पर पत्ते सहित घर पहुँच कर चल बसा दुनिया से ।

संत को खाना खिलाना चाहते थे अपने पुत्र के मृत्यु को छुपा कर
खाना चाहते थे तब तिरुनावुक्करसर कुटुंब सहित बैठकर
बार-बार पूछने पर पता चला प्रथम बेटा चल बसा नाग के काटने पर
मंदिर आने का आदेश दिया संत बेटे के मृत शरीर उसे लेकर
एक ही कीर्तन पर उठ बैठा प्रथम तिरुनावुक्करसर फुर्सत सहित
खाने लगे सब लोग बैठकर आनंद विभोर होकर भक्ति सहित
कुछ दिन साथ रहे वही पूजा पाठ कर तिरुनावुक्करसर फिर गए
शिव पद मिला सानंद जीकर अप्पूदियडिगल नायनार शिव से मिल गए ।

शिव भक्त से प्यार किये, अप्पूदियडिगल सतत ।
शिव भक्त को अपनाकर, पाए शिव पद अमर ।।

अब युद्ध करो

– डॉ. आनंद दाधीच 'दधीचि',
बेंगलूरू, कर्नाटक

हमारी,
सुबह सुलगानेवालों को,
रातें भभकानेवालों को,
आत्मा तड़पानेवालों को,
निर्दयता से उधेड़ो,
अब युद्ध करो... !
हमारी,
संस्कृती सड़ानेवालों को,
पीप, खून, पसारनेवालों को,
आनबान ललकारनेवालों को,
पत्थरों से रगड़ो,
अब युद्ध करो... !
हमारी,
हँसी हथियानेवालों को,
खेती उजाड़नेवालों को,
खुशी दहकानेवालों को,
बर्बरता से कुचलो,
अब युद्ध करो... !
मारो, तोड़ो, मसलो,
अब युद्ध करो... !
काटो, फोड़ो, कुचलो,
अब युद्ध करो... ।
चीरो, बोटो, पटको,
अब युद्ध करो... ।
अब युद्ध करो... !



घर का ख्वाब

– श्री. चन्द्रकांत खुंटे 'क्रांति',
जांजगीर, छत्तीसगढ़

बचपन में सोचता था
बड़े होकर बड़ा घर बनाऊँगा
एक ऐसा घर जहाँ
सुकून के पल बिताऊँगा
उसमें टाइल्स बिछाकर
ए.सी. कूलरों से सजाऊँगा
माँ–बाप होंगे ईश्वर की मूरत
फिर कर्मो से उसे स्वर्ग बनाऊँगा
आलीशान अपना बंगला होगा
गद्दे होंगे मखमल के
सुख की नींद बीतेंगे बिस्तर में
ओढ़ना होगा मलमल के ।
जब बड़ा हुआ तो सारे ख्वाब
धरे के धरे रह गये
एक घर बनाने के जुगत में
माँ–बाप, गाँव–घर सब परे हो गये
निकला परदेश स्वप्न को पूरा करने
रहा कुसुर मुसाफिर रूप धरने
हुआ कुछ नहीं, मजदूर सा जीवन है
नौकरों सा सलूक कष्ट अनगन है
मेरे स्वप्न पड़े वही पर अधूरे हैं
दूसरे के ख्वाब को कर रहा पूरे हैं ।।



जड़ता से जीवन दुखमय हो

– डॉ. त्रिलोकी सिंह, प्रयागराज, उ.प्र.

प्रेम सिमटकर रह जाता है,
जीवन में जब जड़ता आती ।
मन चिन्तन से हटता जाता,
सचमुच बुद्धि विकृत हो जाती ।। 1 ।।
फिर नफरत के बीज पनपते,
यह मन मनमानी करता है ।
अहित प्रियजनों का करने में,
तनिक नहीं यह मन डरता है ।। 2 ।।
मन विकार से ग्रस्त हुआ तो,
फिर तो उसको सुपथ न भाता ।
जड़ता में ही फँसा हुआ वह,
जो जी चाहे करता जाता ।। 3 ।।
व्यक्ति विवेक-हीन हो जाता,
जीवन में जब जड़ता आती ।
यह जड़ता ही तरह-तरह से,
मानव का अपमान कराती ।। 4 ।।
जड़ की जड़ता से जीवन का,
प्रगति-मार्ग अवरोधित होता ।
जड़ अपनी जड़ता के कारण,
अपना समय व्यर्थ में खोता ।। 5 ।।
फिर, सारी जड़ता को छोड़ो,
श्रेष्ठ जनों की संगति कर लो ।
उनके श्रेष्ठ विचारों से निज,
जीवन को प्रकाश से भर लो ।। 6 ।।
यह विचारकर ओ मानव ! तुम,
अमति-कुमति सब दूर भगाओ ।
स्वयं सहित सबके जीवन में,
नित खुशियों के फूल खिलाओ ।। 7 ।।
जड़ता का अस्तित्व मिटाकर,
हर प्रकार का ज्ञान बढ़ाओ ।
मिटे सकल दुर्भाग्य तुम्हारा,
अपना सोया भाग्य जगाओ ।। 8 ।।



चार लोग

– श्री. सुनील प्रकाश भारद्वाज, लखनऊ, उ.प्र.

चार लोग क्या कहेंगे,
यही हम सदैव सोचते रहे ।
पूरे जीवन भर हम,
उन्ही चार लोगों को खोजते रहे ।
उम्र के इस मोड़ तक,
वो चार लोग अभी तक नहीं दिखे ।
सब ने अपने जीवन के पन्ने,
स्वयं ही अपने हाथों द्वारा लिखे ।
सीधी राहें बनानेवाले,
किसी की परवाह नहीं किया करते ।
अपने कर्मों की झोली,
किसी और के भरोसे नहीं भरा करते ।
लोग तो कुछ कहेंगे ही,
उन्होंने कब किसी पर दया की है ।
पतिव्रता सीता को भी न छोड़ा,
जो अग्नि परीक्षा दे निकली खरी है ।
अपने साहस से आगे बढ़कर,
नई राहों को खुद बनाना होगा ।
कुछ समय बाद निश्चित ही,
आपके पीछे पीछे जमाना होगा ।



खूब चले फिर नाम

– श्री. रमेश मनोहरा, जावरा,म.प्र.

खोट भरा जिनका रहे सदैव ही किरदार
उससे आप करें नहीं रमेश कभी न प्यार

पीठ पीछे लात पड़े करें न उससे बात
अवसर मिलते ही करें आप उसी पर घात

अच्छा काम आप करें अपने जीवन काल
जीवन भर लेकर चले सदैव अच्छे ख्याल

छोटे हो या हो बड़े करिये मीठी बात
बोली में होवे सदा सुख की ही बरसात

होते बुरे लोग यहाँ करते समय खराब
उनके साथ रहे नहीं रमेश कभी जनाब

मन में रखे आप सदा हरदम मीठे बोल
फिर अपने ही हृदय के कपाट रमेश खोल

जीवन मिला है तुझको कर अच्छे तू काम
जग का हो इससे भला खूब चले फिर नाम

खुद का वे रखते नहीं देखो अपना ज्ञान
फिर भी रमेश चाहते सब करें सम्मान

पैसों में रहता सदा जिनका सदैव ध्यान
मिलना उनसे है नहीं रमेश अब आसान

देते सदैव झूठ का रमेश तुझको ज्ञान
मानो उसको ही सदा बहुत बड़ा शैतान



माँ का हृदय

– डॉ. निशा नंदिनी भारतीय, तिनसुकिया, असम

माँ सिर्फ़, माँ होती है,
इसकी–उसकी–किसकी भी हो,
माँ सिर्फ़ माँ होती है ।
माँ का हृदय धड़कता है,
सिर्फ़ बच्चों के लिए ।
माँ की रचना की प्रभु ने
सिर्फ, बच्चों के लिए ।
बच्चों के बिन सूना संसार,
बच्चे ही माँ की जान हैं ।
बच्चों से हर माँ का जीवन,
बच्चे ही माँ के प्राण हैं ।
हर माँ के मन में सपने पलते,
बच्चों को देख फलते–फूलते ।
बच्चे उसके जीवन का गहना,
बिन बच्चों के एक पल न चैना ।
हर बात शुरू होती बच्चों से,
और खत्म होती बच्चों पर,
बच्चों में छिपी कहानी उसकी,
बच्चों से चलती ज़िंदगानी उसकी ।
रक्त की हरेक बूँद में,
रोम–रोम में बच्चे होंगे ।
हृदय निकालकर देखो माँ का
उसमें सिर्फ़, बच्चे होंगे ।



अब मैं बूढा हो रहा हूँ

– डॉ. किशोर अग्रवाल, रायपुर, छत्तीसगढ़

वृक्ष रुक्ष हो रहा
पत्तियाँ सिमट रही है
छाल तने से अलग हो रही
तंत्रिकाएँ व प्रतान पास नहीं आते लताओं के ।
नही बैठती अब कोयल डालों पर,
अलबत्ता गिद्ध ने डेरा जमाया है ऊपर फुनगी पर ।
वसंत आने को है
नव किसलय फूट रहे वन में ।
पलाश ने कलियाँ चटकाई हैं
और भी पौधे जुटे शृंगार में
पर इस बूढे बरगद की सूखी जटाएँ हैं ।
एक बड़ा सा बक्कल छाल का
उतर कर
आधा मुझपर, आधा जमीन पर,
लौट रहा है मेरी उम्मीदों सा ।
जलधाराओं व खनिजों के स्रोत दूर हो रहे हैं मेरी पहुँच से ।
पर फिर भी अपनी आशाओं की विशाल बाँहें फैलाए, अनंत आकाश को देखता
खड़ा हूँ मैं ।
पत्ता-पत्ता तिरोहित हो जाऊँगा,
समय के प्रवाह में खो जाऊँगा,
उस ओर बढ आए हैं कदम शायद ।
अब मैं बूढ़ा हो रहा हूँ ।



वे कैसी औरतें थी

– पंडित रावेंद्र तिवारी राज, रीवा, म.प्र.

वे कैसी औरतें थी ना यार
जो चूल्हे में चाय बनती थी
ठंडी गर्मी और बरसात के लिए
ईशान ला घर में सजाती थी ।
जो सारे घर का पेट भरती थी
और बाद में ही खुद खाती थी
खत्म हुई सब्जी को छिपा कर
अभी है बेटे को खिलाती थी ।
वे कैसी औरतें थी ना जो
बच्चों को पय भी पिलाती थी
तब भी पल्लू ढक लेती थी
और माँ का फर्ज निभाती थी ।
वे कैसी औरतें थी ना जो
बड़ों से न जवान लड़ाती थी
बेटों को डाँट लगाती थी
बच्चों को सही मार्ग बताती थी ।
वे कैसी औरतें थी ना जो
चक्की चलाती खाना बनाती थी
इतना सब करके भी कभी
अनोखा परिवार सजाती थी ।
वे कैसी औरतें थी ना जो
अपना हर दुख दर्द छिपाती थीं
अपना हर दुख भुला कर जो
माँ का किरदार निभाती थीं ।

तुर्कीए पर ना करना भरोसा... !



– श्री. संजय एम. तराणेकर,
इन्दौर, म.प्र.

अब कोई तुर्कीए पर ना करना भरोसा,
मित्रता के नाम पर हथियार है परोसा ।
तुर्कीए में भूकंप का कहर बरसा गुरु,
भारत ने 'ऑपरेशन दोस्त' किया शुरू ।
रेस्क्यू टीमों ने बाहर निकालने में मदद,
मलबे में दबे लोगों को खोज रहें सतत ।

अब कोई तुर्कीए पर ना करना भरोसा,
मित्रता के नाम पर हथियार है परोसा ।
जब-जब भी तुर्की पर मुसीबत हैं आई,
तब-तब भारत ने सहयोग, जानें बचाई ।
तुर्कीए अहसान ना माननेवाला देश हैं,
दुश्मन का साथ देनेवाले मित्र क्लेश हैं ।

अब कोई तुर्कीए पर ना करना भरोसा,
मित्रता के नाम पर हथियार है परोसा ।
जागो तुर्की का करो आर्थिक बहिष्कार,
ना खरीदो उसका सामान रोको रफ्तार ।
अब कभी यात्रा की कोई योजना बनाएँ,
तुर्कीए-अज़रबेजान को छोड़ कही जाएँ ।



ममता

– डॉ. बबिता सिंह,
वैशाली, बिहार

स्नेह की मूरत, त्याग की कहानी
मत्सर के कारण हुई ममता बेगानी ।
बिन तेरे होली अब नहीं जमती
तेरी सिली चुनरिया बाजारों में कहाँ मिलती ।
कपड़े पहनाकर तेरा हसरत से निहारना
किसी की औकात नहीं ऐसे खुशियों को बाँटना ।

तेरी रोटी की मिठास भी तो गजब थी
खाने का स्वाद, रुचि भी तुम्हारे प्रेम से ही थी ।
ईश्वर अगर बैठ जाए इस धरा पर आकर
खुश हूँ माँ निश्चय ही तुमको पाकर ।
क्योंकि उसने जो दिया हाथ बढ़ाकर,
तुमने सारा भर दिया झोली में लाकर ।

तेरा ऋण तो कोई भी नहीं चुका सकता,
ना समझनेवालों का खुदा भी नहीं हो सकता ।
रब से ज्यादा है तेरी रहमत की ताकत
खुदा भी विवश होगा देख तेरी बगावत
तेरी निश्छलता पर करूँ मन समर्पण
तेरी ही दुआ से धन्य रहे जीवन
तू स्वस्थ रहे, जिए सौ साल
तेरी । ममता पाकर बनूँ मालामाल ।



आओ मिलकर पेड़ लगाएँ

– श्री. भूपसिंह 'भारती', महेन्द्रगढ़, हरियाणा

आओ मिलकर पेड़ लगाएँ

प्यारे भैया, प्यारी बहना ।
घर-घर पेड़ लगाकर रहना ।।
आए आग बरसाता सूरज,
मुश्किल है ताप को सहना ।
बड़े जोर की गर्मी पड़ती,
इस गर्मी से मतना फ़हना ।
सुनो ध्यान से बात मेरी,
बिन पेड़ों के पड़ता दहना ।
पेड़ लगाओ धरा बचाओ,
गुरुओं का भी ये कहना ।
पेड़ ही पेड़ धरा पर होंगे,
लगे कवच धरा ने पहना ।
आओ मिलकर पेड़ लगाएँ,
कहते पेड़ धरा का गहना ।

जीना है तो पेड़ लगाओ

गर्मी सही नहीं जाती,
गर्मी पड़ती जोरों की ।
इस गर्मी के कारण तो,
हालत बुरी है मोरों की ।
रीना मीना सुन री टीना,
बैठे-बैठे आए पसीना,
इस गर्मी के कारण तो,
बिन पेड़ों के मुश्किल जीना ।
प्यारी बहना सुन री बहना,
गुरुजनों का भी है कहना,
पेड़ लगाओ धरा बचाओ,
पेड़ ही है धरती का गहना ।
जीना है तो पेड़ लगाओ ।
धरा को हरा भरा बनाओ ।।



उत्तम काम करेंगे हम ।

– श्री. दुल्कान्ति समरसिंह, श्रीलंका

अध जल गगरी छलकत जाए,
हर वक्त कुछ सीखेंगे हम ।
जैसी करनी-वैसी भरनी,
उत्तम काम करेंगे हम ।
जो होना है तो वह ही होगा
खुशी से ही जीएँगे हम
किसलिए रोते हैं, जीना सीखेंगे
मरना तो एक दिन होना ही है ।
पुष्प खिलेगा, कल मर जायेगा ।
इंद्रधनुष एक पल मिट जाएगा
ये पल फिर कभी नहीं आएगा ।
तो फिर क्या सोचेंगे हम ?
जैसी करनी-वैसी भरनी,
उत्तम काम करेंगे हम ।
सौ साल पहले भी नहीं थे ये हम
और सौ साल से आगे भी नहीं हम
इतनी अस्थायी राहत के लिए,
क्यों हम रोते हैं, यारो ?
खुश रहेंगे हम, जीना सीखेंगे
मरना तो एक दिन होना ही है ।।



गीत ... मापनी

आओ ! सोये देव जगायें ।।

– श्री. राज किशोर वाजपेयी

'अभय', ग्वालियर, म.प्र.

असुर वृत्तियाँ सबल हुई है,
पीड़ाएँ फिर नवल हुई है,
हिंसा, लूट, भोगवादी की,
इस झाँकी को हम विसरायें ।
आओ ! सोये देव जगायें ।।

अर्थ प्रधान विश्व कर रखा,
सद्कर्मों को नहीं भुलायें,
धर्म, अर्थ, व काम, मोक्ष के,
ये क्रम जीवन में अपनायें ।
आओ ! सोये देव जगाएँ ।।

धर्म सनातन भूल रहे हैं,
भोगवाद में झूल रहै है,
वंशज परशुराम, राणा के,
फिर से अपनी ज्योति जलाएँ ।
आओ ! सोये देव जगायें ।

आज विभाजन रोके अपना,
पूरा करना हमको सपना,
ज्ञान हमारा जग में पूजित,
भारत माँ का मान बढायें ।
आओ ! सोये देव जगायें ।।

हम दधीचि, हम वीर शिवा है
राम, कृष्ण के अंश हमी हैं,
पूर्ण समर्पित जीवन करके,
विश्व-पटल पर भारत लायें ।
आओ ! सोये देव जगायें ।।

दैन्य, मलिनता को हरना है
दुष्ट-भाव को अब मरना है ।
करैं शक्ति अनवरत साधना,
सफल तपस्या करते जायें ।
आओ ! सोये देव जगायें ।।

भारत-भूमि देव को प्यारी,
बनता ईश्वर भी अवतारी,
निशचर हीन करें धरती को,
ऐसा ही हम हवन रचाऐं ।
आओ ! सोये देव जगायें ।



जो बीत गई

– डॉ. अलका अग्रवाल,

जयपुर, राजस्थान

जो बीत गई, वह बात गई ।
अब बार-बार, पछताना क्यों ?

पछताने से भी, होगा क्या ?
नयनों से नीर, बहाना क्यों ?

जो घाव हुआ, उसको फिर फिर ।
क्यों छेड़ रहा, फिर टीस रहा ।

क्यों पुनः पुनः, मन में दोहरा ।
हर समय, घाव को रखे हरा ।

ना बार बार, मंथन कर बस ।
अब छोड़ उसे, दुःस्वप्न समझ ।

जो बीत गया, वह छूट गया ।
अब भूल उसे, चल आगे बढ़ ।



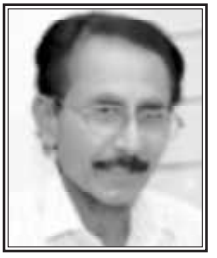
सचेत न हो पाया

– श्री. राजेन्द्र लाहिरी,
पमगढ़, छत्तीसगढ़

उनकी कारगुजारियों को जानने से
से पहले अचेत न हो पाया,
लूटा पड़ा है मेरे अपनों का संसार
वक्त रहते मैं सचेत न हो पाया,
जानकर भी क्या कर लेता
विरोध करने का साहस ही नहीं था,
सर्व अधिकारों से मैं भी सुसज्जित हूँ
मेरे मन में आया मानस नहीं था,
मेरा ही साथ लेकर वो लूटता रहा,
चंद सिक्कों की लालच में
मेरा अधिकार टूटता रहा,
चंद परदेशी परदेश से आकर,
मीठी वाणी से बतियाकर,
चाल चली ऐसी कि मेरा सब कुछ खो गया,
धन धर्म दौलत और जमीन
पता नहीं कब उनके चरणों में सो गया,
जब जागा तब तक सब खो चुका था,
आक्रांताओं का साथ देकर मैं खुद
अपनी ही राहों में कांटे बो चुका था,
मानसिक नशे का उनका खुराक
तन मन में आज भी सरसरा रहा है,
गाहे बगाहे मार खा-खाकर
उन पर ही अपनी कमाई लुटा रहा है,
इतना होने के बाद भी
मैं सचेत हो नहीं पा रहा हूँ,
जहाँ होना था मुझे निष्कंटक,
अपनी करनी से अतीत की भूलों को
मतैक्य न हो हर ताकत की जड़ को,
सहेज नहीं पा रहा हूँ ।

माँ एक : रूप अनेक

– श्री. चक्रधर शुक्ल, कानपुर, उ.प्र.



माँ का दूध
बनाए बलशाली,
चेहरे पर
लाए लाली ।
माँ का प्यार
अनोखा,
नहीं छलावा
कभी न धोखा ।
माँ की गोदी
कितनी प्यारी,
महके
जीवन की फुलवारी ।
माँ का हृदय
विशाल,
जहाँ फले-फूले हैं
बापू-लाल ।



उठो भय त्याग सामना करो

– डॉ. संजय सिंह 'स्वप्निल',
श्रीनिवासपुरी, नई दिल्ली

तुम दस, वह आतंकी अकेला,
क्या हुआ जो हाथ में
उसके बंदूक हो या भाला ।
उठो भय त्याग सामना करो,
कायर की तरह मरने से अच्छा
सामना कर, लड़कर मारकर मरो ।
याद करो तुम, किसकी सन्तान हो,
सवा लाख से एक लड़ाया जिसने
उस गुरु गोविंद के अभिमान हो ।
खूब लड़ी मरदानी की,
तुम वीर स्वाभिमान हो ।
घास की रोटी खाकर भी,
न झुकने वाले शूर की शान हो ।
फिर क्यूँ डरते हो ?
क्यूँ भागे फिरते हो ?
उठो भय त्याग सामना करो ।
भूल गए उस वीर कुंवर को,
जिसने गोली खाई थी,
अँग्रेज़ों से लड़ने के खातिर,
काट हाथ गंगा में बहाई थी ।
पुरखे जिनसे काल भी डरता था,
जिनका नाम लाल-बाल-पाल था ।
भगत राजगुरु सुखदेव हेमू ने,
हँसकर फंदा चुमा था ।
अशफाक आजाद बोस जिनसे,
फिरंगी थर-थर थर्राता था ।
उन पितरों को लज्जित न करो,
उठोभय त्याग शिवा सम हुँकार भरो ।
एक बार दहाड़ उठे तो
वो कायर फिर न आएगा,
वार करना तो दूर की कौड़ी
देखकर ही भाग जाएगा ।

अब

– श्री. देवेन्द्र पाल सिंह 'बर्गली',
नैनीताल, उत्तराखण्ड

रटने लगे हैं
तोते राम राम
झुण्ड में सड़कों पर
श्वेत गद्दीदार ऊन
के साथ भेड़े अब
मे मे नहीं करती
छोड़ दिया है उन्होंने
ऊन और माँस कमाना
वे अब पत्तियाँ
नहीं खाती
क्योंकि गडरिया
अब यही चाहता है ।
बाँचने लगी है कथाएँ
चैतन्य-सी अब
नाचने लगी हैं
छोड़कर स्वधर्म
परमार्थ का
कटने नहीं अब
काटने लगी हैं
क्योंकि गडरिया
अब यही चाहता है ।





उन्हें पहुँचाना श्मशान चाहिए

– कैप्टन डॉ. जय महलवाल (अनजान), बिलासपुर, हि.प्र.

न गोला चाहिए,
न बारूद चाहिए,
हम हैं चैन – अमन के पुजारी,
हमको विश्व में शांति ही शांति चाहिए ।
न किसी की ज़मीन चाहिए,
न किसी का ज़मीर चाहिए,
जो देखेगा हमारे देश की ओर गंदी नज़र से,
वो हमें निस्तेनाबूद चाहिए ।
न हमको किसी की झूठी सहानुभूति चाहिए,
न हमको किसी के प्राणों की आहुति चाहिए,
अगर किसी ने आँख उठाई हमारे देश पर,
हमको उनकी नोची हुई आँख चाहिए ।

****

हम अपनी सुरक्षा करने में हैं सक्षम,
हमें न कोई मीडिएटर चाहिए,
जो छुरा घोंपे हर बार हमारी पीठ पर,
हमें वो दुश्मन अपना गुलाम चाहिए ।
जब कदम बढ़ा ही दिए युद्ध में,
फिर पीछे हटते कदम नहीं चाहिए,
जो मारे हमारे निर्दोषों को,
हमको उन्हें पहुँचना श्मशान चाहिए ।
हमें नाज़ है अपने वीर जवानों पर,
हमें उनका हौंसला बढ़ाना चाहिए,
करते जो देश की रक्षा परिवार अपना छोड़कर,
हमको ऐसे देश की शान चाहिए ।।

****



नहीं

– श्री. बिमल तिवारी 'आत्मबोध', देवरिया, उ.प्र.

नहीं कभी भी उसकी थोडी याद होती है,
मेरी माँ तो हर पल मेरे साथ होती है,
मेरे जीवन की हर साँस में माँ ही होती है,
मेरे जुबान की हर बातें तो माँ की होती है,
जागते सोते आँखों में तस्वीर उसी की,
मेरे हाथों के किस्मत की लकीर उसी की,
मेरे सिर पर माँ की सदा आशीष होती है,
मेरी माँ की एक दिन नहीं दिवस होती है ।।

हम सब हिन्दी के उत्थान का काम करेंगे ।



मजदूर दिवस पर एक सच्ची घटना

– श्री. आर.के. रस्तोगी, गुरुग्राम, हरियाणा

सब जानते है आज एक मई है ।
यह भी जानते मजदूर दिवस है ।।
आज जो मैंने एक घटना देखी ।
उसको कलम लिखने को विवश है ।।
एक गरीब मजदूर महिला ।
एक भट्टे पर रो रही थी ।।
सिर पर अपने ईटे ढो रही थी ।
पर असल में गरीबी ढो रही थी ।।
उसका एक बच्चा सो रहा था ।
दूसरा दूध के लिये रो रहा था ।।
अगर वह बच्चे को दूध पिलाती ।
तो वह खड़े मुंशी की मार खाती ।।
इसलिए वो झाड़ियों के पीछे ।
पेशाब करने के बहाने जाती ।।
और अपने बच्चे को दूध पिलाती ।
वह गरीब मजदूर महिला पेट से थी ।
उसकी डिलीवरी की डेट नजदीक थी ।।
वह मुंशी से गिडगिड़ा रही थी ।
दो दिन की छुट्टी माँग रही थी ।।
छुट्टी के बदले गन्दी गालियाँ दे रहा था ।
उसको अनाप–सनाप भी बक रहा था ।।
जैसे ही उसने कुछ ईंटें उठाई ।
वह प्रसव पीड़ा से चिल्लाई ।।
दे दिया एक बालक का जन्म ।
पर वह मौत से न बच पाई ।।
देख कर बच्चे भी रोने लगे ।
और मरी माँ से चिपटने लगे ।।
हम हर वर्ष मजदूर दिवस मनाते रहेंगे ।
इस तरह मजदूरों की जान गवाते रहेंगे ।।
ऐसे मजदूर दिवस मनाने का क्या फायदा ?
जहाँ महिला को मारने का ऐसा हो कायदा ।।



परिवर्तनीय-आना, स्थानीय-चाहिए

– पं. अंशुल विश्वंभर मिश्र 'कदम',
जबलपुर, म.प्र.

प्रारम्भी नेह –
हर किसी को मुस्कुराना चाहिए ।
साथ जीना तुमको आना चाहिए ।।
मस–अले सारे, तुम्हारे रोज हैं ।
मयकदे में ग़म, भुलाना चाहिए ।। नेह 1
एक आशिक बात, सच्ची कह गया ।
ज़िन्दगी में लौट, जाना चाहिए ।। नेह 2
रंग बदली खूब, दुनिया देखिए ।
वक्त होते लाभ, पाना चाहिए ।। नेह 3
लोग बातें करते, रहते हैं बहुत ।
इस तरह क्या सर, झुकाना चाहिए ।। नेह 4
कितने लोगों ने कहा है हमसे आ ।
भूल कर सब कुछ मनाना चाहिए ।। नेह 5
हो रहा कुछ जान, लेवा ही यहाँ ।
प्यार में जोखम, उठाना चाहिए ।। नेह 6
अब अयोध्या धाम प्यारा नाम है ।
राम धुन ही, गुनगुनाना चाहिए ।। नेह 7
परचयी नेह –
वक्त आने पर हमीं, हम छाएँगे ।
कुछ 'कदम' को भी, कमाना चाहिए ।। नेह 8
आज फिर ख़तरे में, सारा मुल्क है । – तजमींन
देश के अब काम, आना चाहिए ।। – प्रदत्त सुधि



एक कवि के भाव

(कवि की कविता)

– डॉ. संजुला सिंह 'संजू',
जमशेदपुर, झारखंड

हर कवि– कवित्री की शान
होती है उनकी कविता
दिल से लिखे हर उद्‌गार की
जान होती है उनकी कविता ।
दिल की दबी हर बात को
जो कह ना सके खुलकर
वो दिल की सारी बातें
बताती है उनकी कविता ।
होती नहीं है सीमा कुछ
कवियों के कल्पनाओं की
निराशा में भी आशाओं के
दीप जलाती है उनकी कविता ।
इनका ना कोई दुश्मन
ना है कोई हितेषी
ये रहते अपने धुन में
गाती है उनकी कविता ।
रोते को जो हंसाती
हंसते को जो रुलाती
दुश्मनी खत्म करती है
प्यारी उनकी कविता ।
मुख बोलता ना इनका
ना आँखें कुछ है कहती
पर कहती सारी बातें
सुन लो जो उनकी कविता ।
कविता की खासियत है
ये झूठ कुछ ना कहती
चाहे हो कितने खतरे
हंस–हंस के ये है सहती ।
ये सच का साथ देती
ना झूठे पल्लू बाँधे
चाहे हो कोई बैरी
ये सबसे प्यार करती ।
हंसना भी ये सिखाती
रोना भी ये सिखाती
जग में है कैसे जीना
बतलाती उनकी कविता ।
पर, जो नहीं समझते हैं
कवियों के मीठे भावों को
उनको भी देती समझा सब
प्यारी उनकी कविता ।



आदरणीय संपादक महोदय, नमस्कार

शबरी का मई अंक पूरा पढ़ा । बहुत अच्छा लगा । सभी रचनाएँ एक से बढ़कर एक थी । इसको मैंने अपने दस परिचितों को भी पढ़ने के लिए भी फॉरवर्ड किया था । सभी ने इसकी बड़ी प्रशंसा की ।

– श्री. आर.के. रस्तोगी, गुरग्राम, हरियाणा



नवगीत

– श्री. अनुराग सैनी मुकुन्द,
कानपुर, उ.प्र.

ग्रीष्म की चली गर्म हवाएँ
हालत है बेहाल
ऋतु का चेहरा देख सबकी
झुलसी सुन्दर खाल
लगे है बादल मध्यस्थता में
करते दो-दो हाथ
सायं समय को ठंड कराने
लड़ते ऋतु के साथ
लू के आगे बादल की भी
गलती ना है दाल
ग्रीष्म की चली गर्म हवाएँ
हालत है बेहाल
पस्त पड़े हैं अन्दर बाहर
सारे तन के रूप
इतनी गुस्सा करती देखो
आंगन की ये धूप
नगर-नगर में पहले सा ना
दिखता है अब ताल
ग्रीष्म की चली गर्म हवाएँ
हालत है बेहाल
आधुनिक भी मन की करे हैं
दिखते हमें सबूत
जैसे मानो घर का बिगड़ा
निकला एक कपूत
उसके ख़ातिर हमने अपना
दिया था दिल निकाल
ग्रीष्म की चली गर्म हवाएँ
हालत है बेहाल
नहीं मिलेगें छायावाले
गबरीले अब पेड़
नगर बना है बिल्डिंगवाला
जैसे एकत्र भेड़
भला बताओ कैसे होंगे
गर्म से हम निहाल
ग्रीष्म की चली गर्म हवाएँ
हालत है बेहाल

नवांकुर



तस्वीर

– लक्षिता श्रीधर,
ग्यारहवीं कक्षा, एमराल्ड वैली पब्लिक स्कूल, सेलम, तमिलनाडु

एक तस्वीर से एक इंसान को बहुत सारे यादें जुड़ी होती है । जब कोई इंसान अपने पुराने तस्वीर को देखता है, तब उसे सारी यादें याद आती है जो उसने अपनों के साथ बिताया हो । एक इंसान को तस्वीरों से बहुत लगाव होता है क्योंकि उससे उस इंसान का भावनाएँ जुड़ी होती है । कहते हैं कि एक तस्वीर, एक कथा बताती है । हमारी तस्वीरों को जोड़कर हम हमारी जिंदगी की कथा बता सकते हैं । जीवन में सबसे अच्छी चीजें तस्वीरों में कैद किए गए क्षण होते हैं । एक पल बीत सकता है, लेकिन एक तस्वीर उसे जीवित रखती है । उस तस्वीर के कारण, हमें उस खुशी का पल हमेशा याद रहेगा । हम कबी भी उस पल को भूलेंगे नहीं । इसीलिए हमेशा अपने तस्वीरों को संभाल कर रखना चाहिए ।



दिल

– प्रजित. जे. संतोष,
सी.ऐ.टी. कॉलेज, कोवै, तमिलनाडु

बच्चा बन कर वह आता है
पढते पढते वह बडा होता है
विद्यालय से बहुत हाँ
अनुभव से कुछ वह पाता है
चंचल ठहरकर वह बढता है
बढते बढते वह बडा होता है ।
विद्यालय से पहुँचता है वह
महाविद्यालय पहुँचता है वह
बडा हो जाता है उसका तन
बच्चा तब भी ठहरता है मन
माता पिता उसे बढे मानते
समाज भी उसे बडा मानता ।
मन उसका तब भी न मानता
माता पिता का बच्चा ठहरता
वहीं प्यार चाहिए उसे जो था
बचपन में उसे जो मिला था
बच्चा बच्चा है सदा वह प्यारा
माता पिता का वह चमकता सितारा ।

नवांकुर – रचनाएँ आमंत्रित

रचयिता की आयु 21 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए । रचना मौलिक व अप्रकाशित होनी चाहिए । खड़ीबोली हिन्दी का प्रयोग करें । रचना 50 से 150 शब्दों में होनी चाहिए हैं ।

कृपया आयु प्रमाण-पत्र की प्रति साथ भेजें ।



चाय और मिठाई

– शंकर वेंकटेश्वरन,
श्री कृष्णा आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज़, कोवै, तमिलनाडु

एक स्कूल में दो टीम्स की बीच एक छोटा सा प्रतियोगिता हो रहा है । प्रतियोगिता यह थी कि दो दूध से कोई भी व्यंजन बना सकते हैं । एक टीम एक अच्छे से चाय बन चुके थे । और दूसरे टीम ने दूध को उबालना शुरू किया, तो अचानक से दूध खराब हो गया । सभी घबरा गए । एक लड़की अचानक से वह दूध को जल्दी एक मिठाई बनकर ले आई । प्रतियोगिता के जज आ गये । पहले टीम का चाय पिया और कहा कि यह बहुत अच्छी है । दूसरा टीम का मिठाई खाकर बताया कि यह बहुत अलग है और ऐसी मिठाई मैंने कभी नहीं खायी । यह देखकर सब हैरान रह गए । इस कहानी से हम एक बात समझ सकते हैं कि हमारी जिंदगी में बार-बार कुछ गलतियाँ होती रहती है, और लोग हमको देखकर बोलते हैं कि हम खराब हो गये, बदमाश हो गए । इसका मतलब यह है कि हम बहुत ही खूबसूरत और अलग जिंदगी जीनेवाले हैं । और इन सभी की तैयारी है मुश्किल दिनों में दृढ़ रहना । जिंदगी में कोई समस्या हो रही हैं तो हमारी सफलता के लिए आ रहे हैं ।

– श्रीमती. अलमेलु कृष्णन, चेन्नै, तमिलनाडु

पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम्

नैतिकतायाः कः मानदण्डः ?

एकः कृषकः स्वपुत्र्याः विवाहाय सद्भिः राजा भोजात् धनं प्राप्तुम् इच्छति स्म । सः राजानं द्रष्टुं राजधानीं प्रति प्रस्थितवान् । मार्गे क्षुधा शांत्यर्थं किञ्चित् रोटिकां पुटं समायोजितवान् । सः ईश्वरं प्रार्थयति स्म यत् राजा स्वपुत्र्याः विवाहाय पर्याप्तं धनं दातुं सहमतः भवेत् इति ।

सः क्षुधातृप्त्यर्थं तडागस्य तटे उपविश्य भक्षणाय आनीतां रोटिकां हस्ते गृहीतवान् । एतत् भोजनं दत्तं ईश्वरं हृदये धन्यवादं दत्वा खादितुं आरब्धवान् । अथ अस्थिपंजरमिव अतीव कृशः एकः श्वानः तस्य पुरतः आगत्य स्थितः । अनुकंपितः कृषकः तं प्रति रोटिका खण्डं क्षिपतवान् । श्वानः द्रुतगत्या एकेनैव कवलेन रोटिका खंडं निगलितवान् । पुनः उत्सुकतापूर्वकं कृषकम प्रति पश्यति स्म । अनुकंपितः कृषकः सर्वान् रोटिकान् श्वानाय दत्तवान् ।

यदि एकं दिवसं न खादति तर्हि सः न म्रियते इति चिन्तयन् कृषकः आत्मानं आश्वासितवान् । यत् यदि राजा तस्मै भिक्षां ददाति तर्हि अस्माकं स्वदेशस्य नागरिकानां कृते यत् शक्यं तत् कर्तुं योग्यम् एव इति च् सः विचारितवान् ।

क्षुधां सोढ्य राजधानीं प्राप्य तत्रैव निःशुल्क पथिकाश्रये खादितवान् । ततः स राजानं मिलित्वा तस्य आगमनस्य विषये अवदत् । राजा अवदत्, ''भवन्तः भिक्षां याचयितुम् मम समीपम् आगतः । वदतु यदि भवता किमपि दानं कृतं वा । मम समीपे तस्य मापनार्थं तुला अस्ति । तत् तुलायाः सूचिका कियत् भारं दर्शयती तत्तुल्य भारं सुवर्णं गृहणीताम् ।''

''यदि मम समीपे दानं कर्तुं पर्याप्तं धनं अस्ति चेत् अहं किमर्थं धनार्थं भवतः समीपम् आगच्छामि ? मार्गे अहं क्षुधापीड़ितं श्वानं प्रति आहारं दत्तवान्, प्रतिदानरूपेण भवतः पथिकाश्रये भोजनं कृतवान्, अतः मया किमपि महत् दानं न कृतम्'' इति कृषकः विनयेन अवदत् ।

''क्षुधां सहन् श्वान कृते भोजन दानमपि पुण्य कर्म एव'' इत्युक्त्वा राजा भोजः स्वहस्ते तुलां गृहीत्वा तुलायाः एक स्थालिकायाम् कृषकस्य दानंस्य पुण्यम् अपर स्थालिकायां सुवर्णं च स्थापयति स्म । कोषे कियदपि सुवर्णम् आसन् सर्वं राजा स्थालिकायां स्थापितवान् । तथापि तुलायाः सूचकः सन्तुलितः नाभवत् ।

विस्मितः राजा – ''भवान् साधारणःनरः इति न दृश्यते । मां परीक्षितुं आगतः भवान् कः ?'' इत्यपृच्छत्

''राजन् , अहं साधारणः कृषकः, मम विषये अन्यत् किमपि वक्तुं नास्ति'' इति सः विनयेन अवदत् । अथ तत्र प्रादुर्भूता धर्मदेवी, ''हे भोजराजन् ! पुण्यकर्मस्य तौलनम् तुलायां न कर्तुं शक्यते । दातुः हृदयमेव परिमाणम् । एतस्य हृदयं बहु विशालम् अस्ति । सः आडम्बरार्थं दानं न दत्तवान्, अपितु स्वस्य जीवनस्य कृते आवश्यकं तस्य भोजनमपि आत्मार्थतया दत्तवान् । अतः कियत् अपि सुवर्णं स्थापयसि तथापि तुलायाः सूचकः सन्तुलितः न भविष्यति । तेन किं याचितं तत् ददासि चेत् पर्याप्तम्'' इत्युवाच ।

धर्मदेव्याः वचनम् अङ्गीकृत्य राजा कृषकस्य अपेक्षितं सुवर्णं दत्त्वा प्रेषितवान् । कृषकः स्वपुत्र्याः विवाहं भव्य रीत्या कृतवान् ।

यः आत्मार्थतया धर्माचारणं करोति सः स्वयमेव फलं प्राप्नोति ।

ऋतु संहार

– श्री. पूनम मिश्रा 'पूर्णिमा',
नागपुर, महाराष्ट्र



झुलसती गर्मी से
झुलस रही धरती
हो रहा सर्वत्र
जलसंकट
झुलस रही डालियाँ
झुलस रहे पात
पक्षी भी भटक रहे
प्यास बुझाने यहाँ–वहाँ
वन में कोहराम मचा
वर्षा का हो रहा इंतजार
तब एक बूँद वर्षा की
प्रकृति के प्रांगण में
दस्तक देती
और फिर होता वर्षा का
आगाज़
आनंद लहर से
झूम उठती धरती
अज्ञात उल्लास से
झूमती लताएँ
केतकी, गुलमोहर चंपा में
छा जाती खुशियाँ
मार्ग में बिछ जाती
कदंब की पत्तियाँ
मेघ गर्जन से
मयूर का हर्षित नृत्य
पराग की मीठी सुगंध
बहती शीतल बयार
मोह लेती जब
नारी का कोमल तन मन
फिर कोमल स्पर्श
के इंतजार में
आता सावन !!

தமிழமுது – தொன்மை மறவேல்

– எம். ஸ்ரீதர், நிறுவனர் : சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான், சேலம், தமிழ்நாடு

மனித வாழ்வில் நேற்று இன்றாவதும் இன்று நாளை ஆவதும் நாளை மறுநாள் ஆவதும் வாடிக்கை. எப்போதும் எதற்காகவும் காத்திருக்காமல் தொடர்ந்து சென்று கொண்டிருப்பது காலம். காலத்தை வென்றவன் என்பவன் இன்றுவரை ஒருவருமே கிடையாது. காலம் தான் மனிதனை மாற்றி தன் செல்வாக்கை உணர்த்திச் செல்கிறது. எத்தனை வயது கடந்து வந்தாலும் தன்னுடைய மாணவப் பருவத்தினையும் தன்னுடைய கடந்த காலத்தையும் மனித மனமானது மறந்து போகாது.

இன்று புதிதாய் பிறந்தோம் என்று எண்ணி வாழ்பவர்கள் கூட தம்முடைய வசந்த காலமான பள்ளி பருவத்தை மறக்க மாட்டார்கள். இது மனிதனின் இயல்பு. நமக்கு, முன்னோர்கள் நம்மை விட நன்றாக வாழ்ந்து, வாழ்வின் அடிப்படை தத்துவங்களை கோட்பாடுகளை உலகிற்கு அழகுற எடுத்துச் சொல்லியவர்கள். தன்னுடைய அனுபவத்தையும் அறிவையும் தமக்கு மட்டுமல்லாமல் உலகத்தில் உள்ளோர் அனைவருக்கும் பகிர்ந்து அளித்து சிறப்பு செய்ததில் நம்முடைய முன்னோர்கள் என்றும் முன்னோடிகள்.

அவர்களால் பல கருத்துக்கள், பல வாழ்வியல் தத்துவங்கள், பல நடவடிக்கைகள், பல வழிகள் மற்றும் வகைகள் அழகுற எடுத்துரைக்கப்பட்டுள்ளன. அவற்றை நாம் நமதாக்கிக் கொண்டு செயல்படுத்தும் போது வெற்றி என்பது நூற்றுக்கு நூறு சதவீதம் திண்ணம் ஆகிறது.

இன்றைய மனித சமூகமும் புதுமை என்ற பெயரில் தொன்மையை மறந்தே பழகுகின்றது. தொன்மையை மறந்தால் நன்மையை மறந்துவிட வேண்டியதுதான். பழமையை மறக்காமல் அவற்றில் குறிக்கப்பட்டுள்ள நல்ல சிந்தனைகளையும் செயல்களையும் நாம் நமதாக்கும் போது வாழ்வில் வளம் பல பெற்று நலம் பல காணலாம். இதையே தான் ஔவை **தொன்மை மறவேல்** என்று சொல்கிறார். ஔவை தன் வழி நடப்போம் அகிலத்தில் சீரும் சிறப்புடன் வாழ்வோம்.

தொடரும்...



அருள் உலா
திருமுறைத் திருத்தல யாத்திரை
திருத்தெளிச்சேரி

- கயிலைத்திருவடி 'யுவதூத்'

Dr. **என். சந்திரசேகர்,** M.A., B.Ed., Ph.D., சேலம், தமிழ்நாடு



பூவ லர்ந்தன கொண்டுமுப போதுமும் பொற்கழல
தேவர் வந்து வணங்கு மிகு தெளிச் சேரியீர்
மேவ ருந்தொழி லாளொடு கேழற் பின் வேடனாம்
பாவ கங்கொடு நின்றது போலுநும் பான்மையே.

- ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தர் அருளிய 2-ஆம் திருமுறை பாடல்

தற்போது கோயில்பத்து என்று அழைக்கப்படும் திருத்தெளிச்சேரி திருமுறைத் திருத்தலம் காவிரி தென்கரை திருத்தலங்களில் 50ஆவது அருட்தலம் ஆகும்.

அருள் வரலாறு :

முன்னொரு சமயம் காத்யாயண மஹரிஷியின் மகளாகப் பிறந்த பார்வதி தேவியார் இத்தலம் வந்து ஈசனை வணங்கி மீண்டும் இறைவனைத் திருமணம் செய்த திருக்கயிலாயம் சென்றதாகத் தல வரலாறு கூறுகிறது.

உழவனாய் வந்த...

ஒரு சமயம் இப்பகுதியில் கடும் பஞ்சம் நிலவியது. மக்கள் கடும் பட்டினியால் வாடிவருந்தினர். அதுசமயம் ஈசன் உழவனாக கையில் கலப்பையுடன் வந்து இப்பகுதியினை உழுது நெல்விதைகளை விதைத்தார். பயிர் விரைவில் செழித்தது, பஞ்சம் தீர்ந்தது. உமையொரு பாகனே உழவனாக வந்து நெல்விதை தெளித்து செழித்த காரணத்தால் இந்தப்பகுதி தெளிச்சேரி என வழங்கப்பட்டது.

கூவியழைத்த பிள்ளையார் :

ஒரு சமயம் ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தர் பெருமான் இத்தலம் வழியே சென்றார். வயல்வெளி நடுவே இருந்த இந்த ஆலயத்தை அவர் காணாது, இங்கு வந்து இறைவனை வணங்கிப் பாடாது அடுத்த ஊர் நோக்கிச் சென்றார். இதனைக் கண்ட இத்தலத்துப் பிள்ளையார் ஸ்ரீ சம்பந்தரைக் கூவியழைத்தார். சம்பந்தரும் வந்தார், இறைதரிசனம் செய்தார், இனிய தமிழால் பதிகமும் பாடினார்.

பிள்ளையார் சம்பந்தரைப் பத்துமுறை கூவியழைத்த காரணத்தால் இவ்வூர் கூவிப்பத்து என்றழைக்கப்பட்டுக் காலப்போக்கில் கோயில்பத்து என்று மருவியதாகவும் கூறுகின்றனர்.

ராஜலிங்க க்ஷேத்ரம் :

அம்பரீஷன் என்ற மன்னன் இங்கு வந்து இறைவனை வணங்கி

பிள்ளைச் செல்வம் பெற்றான். அம்பரீஷன் வழிபட்ட காரணத்தால் இறைவன் ராஜலிங்கேஷ்வரர் எனப்பட்டார்.

பாஸ்கர லிங்கம் :

சூரியன் தன் மனைவி சாயாதேவி காரணமாகத் தமக்கு ஏற்பட்ட சாபத்தை இத்தலம் வந்து, இங்கு அருளும் ஈசனை வணங்கி போக்கிக் கொண்டதால் இறைவன் பாஸ்கரலிங்கம் என்றும் சிறப்பிக்கப்படுகின்றார்.

சிறப்புக்கள் :

1. பங்குனி மாதம் 13-ஆம் நாள் முதல் 10 நாட்கள் மாலையில் சூரியனின் ஒளி ஸ்வாமி மீது படுகின்றது.
2. இவ்வூர் காரைக்காலம்மையாரின் அவதாரத் தலம் ஆகும்.
3. திருக்கோயிலில் காரைக்காலம்மையாருக்குத் தனிச் சந்நிதி உள்ளது.
4. இத்தலத்து ஈசனையும், அம்பிகையையும் பக்தி சிரத்தையுடன் வணங்கினால் திருமணத் தடை நீங்கும், புத்ரபாக்யம் கிடைக்கும், கல்வியில் சிறந்து விளங்கலாம் என்பது அனுபவம்.
5. திருத்தெளிச்சேரி திவ்ய திருப்பதியானது க்ருதயுகத்தில் ப்ரம்மவனம் என்றும், த்ரேதாயுகத்தில் சமீவனம் என்றும், த்வாபரயுகத்தில் ஆனந்தவனம் என்ற பெயரிலும், கலியுகத்தில் முக்திவனம் என்றும் சிறப்பிக்கப்பட்டு யுகங்களைக் கடந்த தொன்மையான ஆலயமாக இன்றளவும் அருளொளி வீசி வருகின்றது.

ஸ்ரீ ஸ்வாமி - ஸ்ரீ அம்பாள் :

இறைவன்	: ஸ்ரீ பார்வதீஷ்வரர்
இறைவி	: ஸ்ரீ சத்யம்மை (எ) ஸ்வயம்வர பார்வதியம்மை
தலமரம்	: மாதவி மரம், வன்னி மரம், வில்வ மரம்
தீர்த்தம்	: சூர்ய புஷ்கரணி
வழிபட்டு அருள் பெற்றோர்	: பார்வதி, சூர்யன், அம்பரீஷன், பல்குணன் முதலானோர்.

அருட்பதிகங்கள் :

இத்தலத்து இறைவனை ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தப்பெருமான் பாமாலை சூட்டி மகிழ்ந்துள்ளார்.

தரிசன காலம் : காலை 06.00 மணி - பகல் 12.00 மணி வரை
மாலை 04.00 மணி - இரவு 08.30 மணி வரை

திருக்கோயில் முகவரி :

ஸ்ரீ பார்வதீஷ்வரர் திருக்கோயில்,
கோயில்பத்து,
காரைக்கால் - 609 602.
புதுச்சேரி மாநிலம்.

தொடர்புத் தொலைபேசி எண்கள் :
04368-228124/223054, 97866 35559



அமைவிடம் :

காவிரி தென்கரைத் திருமுறைத் திருத்தலங்களுள் 50-ஆவது அருட்தலமாக வரும் கோயில்பத்து என்று தற்போது அறியப்படும் திருத்தெளிச்சேரி திருமுறைத் திருத்தலமானது புதுச்சேரி மாநிலம் காரைக்கால் பேருந்து நிலையம் அருகிலேயே அமைந்துள்ளது.

ஸ்ரீ ஸ்வயம்வர பார்வதியம்பிகா ஸமேத
ஸ்ரீ பார்வதீஷ்வர பரப்ரஹ்மணே நம:

... அருள் உலா தொடர்கிறது.

Scan this QR code to follow
SHABARI BOOK SALES, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

Scan this QR code to follow
SHABARI SIKSHA SANSTHAN, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

இணைந்திடுங்கள்... இணைத்திடுங்கள் இதயங்களை...

அன்பார்ந்த வாசகர்களே,

உள்ளத்தையும் எண்ணத்தையும் உயர்த்தும் படைப்புகளுடன் ஹிந்தி, தமிழ், சமஸ்கிருதம் ஆகிய மும்மொழிகளில் வருகிறது சபரி சிக்ஷா சமாச்சார் பத்திரிக்கை. ஆண்டுச் சந்தா ₹100/- செலுத்தி இந்த இலக்கியப் பயணத்தில் நீங்களும் இணையலாம். நண்பர்களுக்கும், உறவினர்களுக்கும், மாணவர்களுக்கும் இந்த நல்ல பத்திரிக்கையை பரிசளியுங்கள்.

Send MONEY ORDER or DD to
SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
194, 2nd Agraharam, SALEM-636001. TN
PHONE : 9842765414

SHABARI SIKSHA SAMACHAR, SALEM

Form IV (See Rule 8)

Statement about ownership and other particulars about Shabari Siksha Samachar (according to Form IV. Rule 8 circulated by the Registrar of Newspaper for India).

1.	Place of Publication	:	Salem - 636 001
2.	Periodicity of its Publication	:	Monthly
3.	Printer's Name	:	D. Sivakumar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636 001.
4.	Publisher's Name	:	M. Sridhar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	37, First Agraharam, Salem - 636 001.
5.	Editor's Name	:	M. Venkateswaran
	Nationality	:	Indian
	Address	:	197, Second Agraharam, Salem - 636 001.
6.	Name & Address of the individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than 1 % of the capital	:	M. Sridhar Owner & Publisher 37, First Agraharam, Salem - 636 001.

I, M. Sridhar, hereby declare the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd.

Date : 05.06.2025. **M. Sridhar**

Signature of the Publisher

VANI VIKAS FIRST CONVOCATION CEREMONY

प्यारे शबरी स्नेही तथा विद्यार्थी,

नमस्ते । बड़े हर्ष तथा गर्व के साथ हम आपको शबरी के पहले दीक्षांत समारोह के लिए आमंत्रित कर रहे हैं । वाणी विकास की सभी परीक्षाओं में उत्तीर्ण हुए आपके सारे विद्यार्थियों को गौरव प्रदान करने के लिए उनको हम दीक्षांत प्रमाण पत्र प्रदान करनेवाले हैं ।

अपने विद्यार्थियों के साथ हम आपको इस समारोह में भाग लेने के लिए आमंत्रित कर रहे हैं । कृपया हमारे वेबसाइट **https://sansthan.shabari.org/** पर जाकर आवेदन पत्र भरने के साथ ₹1000/- का शुल्क भी 15 जुलाई, 2025 तक भेज दीजिए । हर छात्र को प्रमाण पत्र के साथ एक पुरस्कार भी दिया जाएगा ।

आपकी भागीदारी को यथाशीघ्र हमें सूचित करें । दीक्षांत समारोह का समय तारीख और स्थान यथाशीघ्र हम आपको सूचित करेंगे । आइए हम सब मिलकर भावी हिन्दी सेवियों का सम्मान करें ।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !! – शबरी शिक्षा संस्थान, सेलम

அன்புள்ள சபரி நலம் விரும்பிகளுக்கும், மாணவர்களுக்கும் ஓர் அன்பான அழைப்பு !

வணக்கம். சபரியின் முதல் பட்டமளிப்பு விழாவிற்கு உங்களை அன்புடன் வரவேற்கிறோம் ! வாணி விகாஸின் அனைத்து நிலைகளிலும் தேர்ச்சி பெற்ற மாணவர்களைக் கௌரவிக்கும் விதமாக, அவர்களுக்குச் சான்றிதழ்கள் வழங்கிச் சிறப்பிக்க உங்களையும் அன்புடன் அழைக்கிறோம். இந்தச் சிறப்புமிக்க நிகழ்வில் மாணவர்களுடன் இணைந்து ஆசிரியர்களையும் மனதார வரவேற்கிறோம். நிகழ்ச்சியில் பங்கேற்க விரும்பும் மாணவர்கள் **https://sansthan.shabari.org/** என்ற சன்ஸ்தானின் இணையதளத்தில் விண்ணப்பத்தைப் பூர்த்தி செய்து, ₹1000/- கட்டணத்தை ஜூலை 15, 2025-க்குள் அனுப்பி வைக்குமாறு கேட்டுக்கொள்கிறோம். பங்கேற்கும் ஒவ்வொரு மாணவருக்கும் சான்றிதழுடன் ஒரு சிறப்பு பரிசும் வழங்கப்படும். தாங்கள் கலந்துகொள்வதை உறுதிப்படுத்துமாறு அன்புடன் கேட்டுக்கொள்கிறோம். விழா நடைபெறும் இடம் மற்றும் தேதி விரைவில் உங்களுக்குத் தெரிவிக்கப்படும். வாருங்கள், நாளைய ஹிந்தி சேவகர்களை கௌரவிப்போம் ! நன்றி.

ஜெய்ஹிந்த் ! ஜெய் ஹிந்தி !! - சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான், சேலம்

Dear Shabari Community and Students,

Namaste. Shabari Siksha Sansthan, Salem is delighted to announce its First Convocation Ceremony for students who have successfully completed all the Vani Vikas examinations. We invite you to join us in honoring these dedicated students as they receive their well-deserved graduation certificates.

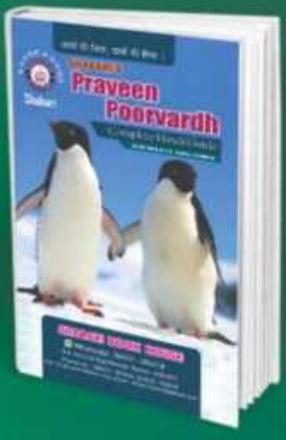
To participate, please register and pay a fee of ₹1000/- on our website, **https://sansthan.shabari.org/**, On or before July 15, 2025. Each graduating student will receive a certificate and a special gift.

The date and venue for the ceremony will be announced shortly. We eagerly anticipate your presence as we celebrate the future torchbearers of Hindi.

Jai Hind ! Jai Hindi !! - Shabari Siksha Sansthan, Salem

PRAVEEN POORVARDH

Just ₹390/- Only



Planned and perfect presentation.
Impressive and easy language.
Presents the Language in its own way.
Perfect companion for Students.
Prefer Shabari Guides.
Feel the difference.
Finest way to pass the exams with confidence.

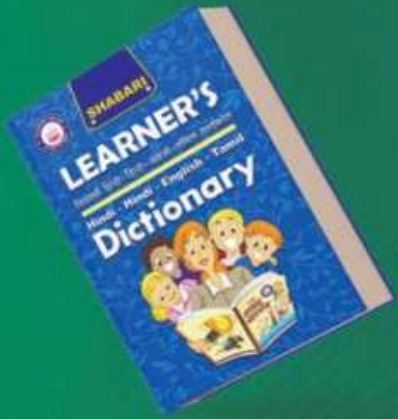
LEARNER'S DICTIONARY

1024 Pages

Just ₹420.00 only

35,000 Words

Hindi - Hindi - English - Tamil



மூன்று மொழிகளின் முத்தான வார்த்தைகள்
முன்னேற்றம் தந்திடும் முத்தான வார்த்தைகள்
மூன்று மொழிகளில் புலமை வாய்ந்திட
முதல் வேலையாய் சபரியை வாங்கிடு
கற்போர்க்கு இது கலங்கரை விளக்கம்
கலைச்சொற்கள் மும்மொழியில் அடக்கம்
கற்போர்க்கு இது மிகவும் நன்று
கற்பிப்போர்க்கும் இதனால் பயன் உண்டு.
தமக்காக ஒன்று !
பிறர்க்கு பரிசளிக்க மிகவும் நன்று !!

Posted at Salem HPO 636 001. June - 2025

Published on 5th June - 2025

Posted on 6th & 7th of every month. R.N.I. No. : TNMUL/1999/00402
Postal Reg. No. :TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024 - 2026
Licenced to post without prepayment: TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024-2026

कृपया सभी पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या का अवश्य उल्लेख करें ।

Please quote your subscription number in all correspondance.

If undelivered please return to
Shabari Siksha Samachar,
A.O. 194, Second Agraharam, Salem - 636 001

To

DON'T TEAR THE LABEL IF UNDELIVERED

Shublekha

Hindi Hand Writing Book

Learn the letters | Write it properly

Let us all write | Loving the letters.

Best Practice | Perfect result for the beginners.



80.00

SHABARI BOOK HOUSE
'Shabari Palace', 194, Second Agraharam, Salem - 636 001.
WhatsApp : 94431-65414
Landline Phone : 94433-65414, 98427-65414
email : gandhijiqa@gmail.com visit us @ www.shabari.org